

Kahani Gunt Basanairki

कहानी गुल बासनैरकी



प्रमोदादल्यधीधोहायद्विरीधिमिलितम् ।
दीपहीनादयाधीनाः प्रवीनाः शोधयन्तुतत् ॥

जो इसके पहले जेमचन्द्र खानी फारसी
उरदूमें कियाथा अब उसकी हिन्दवी
बील चाल देवनागर अक्षरमें लिखा
और श्रील श्रीयुक्त राय धनपति
सिंघ बाहादुरकी आज्ञासे
श्रीशिवनारायण पण्डित
सुद्राक्षित करवाया ।

—00000—

अजीमगञ्ज विश्वविनीत यन्त्रालय
श्रीश्यामलाल चक्रवर्ति ने छापा ।

सम्बत् १८३५ । १८७८ ईसवी ॥

कहानी गुल बासनौबरकी ।

प्रमोदादलबोधोद्गायद्विरोधमिहोदितम् ।
दोषहीनादयाधीनाः प्रवीणाः शोधयन्तुतत् ॥
जो इसकी पहली नेमचन्द्र खत्रीने कारसीसे चरदूम
कियाथा अब उसकी हिन्दवी बीसवाल
देवनागर अक्षरमें लिखा और
श्रील श्रीयुक्त राय धनपति
सिंह बाहादुरके
आज्ञासे

श्रीशिव नारायण परिहृत
मुद्राक्षित करवाया ।

अजीमगञ्ज बिष्णुबिनीद यन्त्रालय

श्रीश्यामलाल चक्रवर्त्ति ने छापा ।

सन्वत् १८३५ । १८७८ ईसवी ॥

मूल एक मुद्रा चार आना मात्र ।

श्रीश्रीगणेशाय नमः ॥ JUL. 18. ॥



गणपत चरण प्रातापते कीनो हम यह काज ।

वाही चरण मनाइये जाते होय सुकाज ॥

धन्यवाद है उस बनानेवालेका कि जिसने
मनुष्यको सबमें श्रेष्ठ बनाया और संसारकी सब
लोगोंकी स्थितिका जोड़ा पहनाया उसकी कृपा
और सहायताकी बादलसे क्यारिध, पीत और
खेहकी सदा भरपूर है और उसकी दयाकी
जलसे खेतियां रूप और चमककी सर्वदा परि-
पूर्ण लेखनीमें यह सकात कहाँ है कि उसकी
रचनाका व्याख्यान लिखे और पलमें यह समा-
वट कहाँ कि उसकी स्तुति उसमें समावे उठाने
वाला आकाशको उसकी मायाकी बोझसे भुका
रहा है और सीनेका कुर्कुट सूरज नित प्रात

समय उसके दातव्यके खलिहानसे तारेका
 कणिकाचुग रहा है पृथ्वीसे ले आकाशतलक
 सेभीने उसकी चौखटपर माथा टेका है और
 सबछोटों बड़ोंने अपना अपना मनोरथ भर
 पाया है उसकी इच्छाका नाखुदा जब दयारूपी
 प्रबल उठाता है संसारके भरीसेकी नाओंको आशा
 कीतटपर पङ्कचाता है और उसकी अनुग्रहका
 सागर जब बढ़ता और उमंगपर आता है तो
 पापके जहाजोंको एक पलमे डुबा देता है जो
 उसके ध्यानमें धूनी लगाये बैठे हैं असङ्ख्य धन
 सम्पत्त उनको प्राप्त है और जो उनकी आर्ध-
 नामें आंखमुंदे रहते हैं वृह अन्तकरणकी आरसी
 में सारा चमत्कार देखते हैं ऐसा बादशाहकि
 दूत उसकी डेवढीके द्वारपाल हैं और शूरज
 चन्द्र उसके घरके रखावाल ऐकमिट्टीका पूतला
 मनुष्य जो उसका बनाया हुआ है उसकी क्या
 शक्त जो अपने बनानेवालेकी स्तुतिका वर्णन करे

अथवा लिखे और करतवको ताड़सके दम लिये
उचित है कि चुपचाप पड़ा हुआ उसके प्रम-
त्कार व्यापारको देखाकरे और सदासर्वदा
उसीके ध्यानमें चित लगाये रहे। इसकी उप-
रान्त यह ईश्वर आधीन बुद्धिहीन श्रीलक्ष्मी
नारायण पण्डित यों लिखता है कि इस संसार
में कोई वस्तु ठहरता नहीं और उसके भिन्न
सभीको नाश हीना है परन्तु एक बात चितकी
फूलवारी कि पतझाड़ उसके फूलोंपर नहीं
आती चोरों को चोरी और डकैतोंकी डकैतीसे
यह सम्पत्त कहीं नहीं जाती क्यारियां उसकी
सदा हरी भरी रहती हैं और ठण्डेपानीको
नहरे सर्वदा बहरही है उसके घरकी नेवको
आपत्यके भोँचालका खटका नहीं होता और
उसके अठारीके दीपककी पवनका भोँका नहीं
लगता यह सम्पत्त व्यय करनेसे दिन दूनी और
रात चौगनी होती है और इस कोठीके महाजन

की साख दिन दिन बढ़ती है बात चीत न होती तो संसारमें धूल उड़ती और बात चीतकी ठण्डी पवन न चलती तो इच्छा और बाञ्छाकी सुगन्ध कभी न महकती इसलिये नित मनमें यही सोच आतीये कि इस संसारमें जोपानी पर एक चिन्ह है ऐसा चिन्ह जमाइये जो सभीने स्मरणार्थ रहजावे और एक ऐसी फुलवारी लगा दूये कि जिसके फूलोंकी लपटसे लोगोंके मरजे सुगंधिक और उसके फूलोंकी महकसे सभीके मूँह मीठे होजावे इस लिये कहानी (गुलवासनौबरकी) जो कि पारसी भाषासे नेम चन्द्र खत्रीने उरदू भाषामें कियाथा पर उसमें बज्जत करके फारसी आरबी शब्द मिले ऊँचे हैं इसलिये सब छोटे बड़े पढ़े अनपढ़े के समझमें नहीं आता है और बज्जतसे लोग नागरीके जाननेवाले इस कहानीके पढ़नेसे निरास रहते हैं इसवास्ते हमने हिन्दवी बोल चाल कि जिसमें

नाम गांव छुड़ाय पारसी शब्दका लावा लेसा
 नहो देवनगर अक्षरमें लिखकर सकल बन्धुमित्र
 गुणी ज्ञानियांकी सभाको सौगात बनाया यद्यपि
 विद्वान और बुद्धिमान लोगोंके साम्हने इस निकम्मे
 प्रोत्तकी क्या सर्यादाहै और सुक्ताकी आभाकी
 आगे सीपकी क्या तुल्यता परन्तु विचारके फूल
 वारीके गालो अच्छी प्रकारसे जान्तेहैं कि फूलके
 साथ कांटेका होना और सूरजके साम्हने काली
 घटाका आना कुछ आश्चर्य नहीं इसलिये सभीसे
 यह आशा रखताहूँ कि मेरे इस बकनैपर तीखी
 दृष्टसे न देखें बरं जहां कहीं भूल चूकहो तो
 अनुग्रह पूर्वक सुधारदे और क्षमा करें और
 अभिप्राय यहहै कि पढ़नेसे इसकहानीसे सबका
 चित आनन्द होवे और इस ईश्वराधीनको
 स्मरण रखें ॥



श्रीश्रीगणेशाय नमः ॥

पहली कहानी शमशादलालपोषके बड़े
बेटेके आखेट जानेमें और जहांगीर
बादशाहसे मिहर अंगेजका बरनन
और उसका प्रश्न सुनकर उसपर मोहित
होनेके वृत्तान्त ॥

विद्वान् ज्ञानियोंने अपने अन्तःकरणके धना-
गारकी खोल और बातोंके गुणियोंने व्याख्यानके
उंडीपलड़ेमें तैल इस कहानीको मोती और
मणिकी समान जो विचार की आंखोंके जोत
देनेवाले हैं ज्ञानके डब्बेमें रखकर बात चीतकी
डोरीमें यों पिरीया है पूरव देशमें शमशादलाल-
पोष नाम एक बड़ा बादशाहथा धन और जनसे
भरापुरा ज्ञान और विद्यामें वैसा नहीं दूसरा

विचारमे नौशेरवानके समान और साहसमें
 हातिमके प्रमाण उसके सात बेटे सब कोई
 विद्या और गुणमे निपुण और राज्यकर्मके
 उद्योगमे अती प्रवीण ऐकदिन बड़ा बेटा बापके
 सनमुख आय हाथजोर बिनती कर सीसनिवाय
 निवेदन करने लगा कि हमारा चित इस नगर
 मे बज्जत उदास रहता है जो आपकी आज्ञा
 पाऊं तो थोड़े दिनोंके लिये आखेटको जाऊं
 और अपने मनको फिरने चलने और आखेटसे बहला
 ऊं जिसमे खटका उदासी का निकल जावे और जीउ
 बियानेसे फिरे बादशाहने शाहजादेकी निवेदन
 सुनकर आखेटकी आज्ञा दी शाहजादा उसी
 समय अपने सब आखेटी पशुपक्षियों और
 बज्जतसे लोगोंको साथ लेकर आखेटको चला
 जाते जाते एक पहाड़की निकट जो ऊंचाईमें
 आकाशके समान था जा पहुँचा अचानक वहाँ
 एक हिरन अति सुन्दर दिखाई दिया शाह-

जादा उसके देखतेही ऐसा मोहित हुआ जैसे कि आपही उस आखेटका आखेट होगया और सभीसे कहा कि सावधान कोई उसपर शस्त्र नचलावे और जो कोई उसको जीता फंदे में फसाकर मेरे निकट लावेगा वुह बज्रतसा पुरस्कार पावेगा और आपभी उसके पकड़ने की चेष्टा करने लगा जब हिरनने देखा कि भागनेका रास्ता नरहा तब फुरतीसे असी चौकड़ी भरी कि अलग पार होगया औ उछल ता कूदता परपटका रास्ता पकड़ा शाहजादेनेभी धोड़ा उसके पीछे डाला और जंगलका पथ-लिया यहांतक कि अपने सब साथियोंसे अलग होगया पर हिरन पर दृष्ट लगाये जाताथा जब दोपहर होगई शाहजादेका बदन पसीनेर होगया और धूपकी तपनसे जी घुटने लगा इतनेमे एक बालूका टीला दिखाई दिया और हिरन उसी टीलेपर चढ़गया शाहजादेनेभी

(८)

घोड़ा उस बालू पर डपटाया पर वृह हिरेन उसकी दृष्टि में न आया और शाहजादा भिचककर रह गया और घोड़े ने मारे प्यास के जीभ निकाल दी और हाँपने लगा शाहजादा मनमलीन घोड़े की बाग थांभेहुवे पैदल चलने लगा और ईश्वर पर ध्यान लगाये चला जाता था कि दूत ने मे घोड़ा घाम और गिरीष्म के हेतु से और मारे भूख प्यास के भूम पर गिरा और अपने जीव के धन को यम दूत के धन रत्न को सौंपा तब शाहजादा रोता हुआ उस बियुवन जंगल में कि जहाँ मनुष्य का नाम औ चिह्न भी न था पग उठाये जाता था थोड़ी दूर गया कि फिर एक उंचा टीला दिखाई दिया शाहजादे ने उस पर चढ़कर एक बड़ा दृष्ट देखा कि जड़ जिसकी पाताल की पड़ंची है और फुनंग आकास से लगी है उसके नीचे एक कुण्ड पानी का उज्जलताई में अमृत जल से अच्छा और मिष्टताई में मिसरी के

शरबतसेभी भला चहल और उसके हरियाला
 लहलहाता हुआ और चौदिशामें उसके बरनर
 को फूलफूला हुआ लालेके आसपास सौसनकी
 टट्टी आकाशी चित्रवर्ण और सन्धाका नसुना
 वृह पुष्प उद्यान खर्ग आरामसेभी रंगरूपमें
 दूना शाहजादा उस जगहको देखकर बहुत
 प्रसन्न हुआ और ईश्वरके चमत्कार व्यापारको
 देखनेलगा निदान गिरते पड़ते उस कुण्डतक
 जा पहुँचा सुसताया और चुशूसे पानी पीकर
 इधर उधर देखने लगा इतनेमें क्या देखताहै
 कि एक सिंहासन बाद शाहीके बैठनेके योग
 धराहै इस सोचमेंथा कि अचानक एक पागल
 मतिहीन सिरपैर नंगा चीलता हुआ जंगलसे
 निकला और उस वृक्षके और चला जब निकट
 पहुँचा शाहजादेने पागलको देखकर जाना कि
 यह कोई योगीहै क्यों कि तेजकी चिह्न उसके
 माथेपर सूरजकी चमकके समान प्रकाश और

चन्द्रमाके जोतके तुल्यवदन बिकाश पागलनेभी
 शाहजादेको देखा पास जाकर पूछा तू कौन है
 और कहाँसे आना ऊँचा इस बियुवन जंगलमें
 कि जहाँ पक्षीपंख नहीं जाय सक्ता है और
 पशुका पिता भीतसे पानी ऊँचा जाता है क्यों
 आया है क्या तुम्हको अपने जीउका भय नहीं है
 तब शाहजादेने अपना व्योरा आदसे अन्ततक
 सब कह सुनाया और पूछा कि आप कौन हैं और
 इस जंगलमें बास करनेका हेतु क्या है पागलने
 कहा कि हे बन्धु तुम यह बात मुझसे मत पूछो
 किसवास्ते कि हमारा समाचार कहने योग्य तो
 क्या बरं सुन्नेके योगभी नहीं किसलिये कि जो
 अपनी शीककी कहानीकी दुलहिनको जीभके
 सिंहासनपर बिटलाऊँ तो निश्चय है कि अन्तः
 कारण सीपके समान अपने कलजेकी फाड़करके
 आसुओंके मोती असङ्ग उसपर निछावर करे
 परन्तु शाहजादेने उसकी इतान्त सुन्नेके लिये

बहुतसी हटकी जैसे कोई किसीके पिछले पड़
 जाता है उस समय पागलने सच कहनेके भिन्न
 अपना छुटकारा न देखकर कहा है आई एक
 बड़ी मेरे पास बैठ और कान लगाकर सुन मेरे
 अन्तःकरणके सीपसे यह बातें कि बिनबिधे
 मोतिके तुल्य हैं चुनकर अपने सुभतिके आंचल
 में भर है बटोही मैं बाबल विलायतका बादशा-
 ह था जहांगीर शाह मेरा नाम है धन सम्पत्त
 मेरे पास बहुत था किसी बातकी कमी नहीं
 ईश्वरने मुझे सात बेटे दिये थे एकसे एक उत्तम
 अच्छी प्रकारसे बादशाही करता था एकदिन
 बड़े बेटेने किसी बटोहीके सुखसे सुना कि तुर्क
 स्थान और चीनमाचीनके विलायतमें कैमूसशाह
 एक बादशाह है उसकी लड़कीका मिहिर अंगेज
 नाम है कि पृथ्वीमें उसके समान दूसरी नहीं जिसके
 रूपकी उज्जलताई और चमकके डहसे पूर्ण
 चन्द्रभी सीगका उजाला करनेहारा सूरजभी

लज्जासे रात दिन आकाश पर चकर मारता है
 उसके उत्तम रूपके आगे यूसफ दास हस्तिकरे
 और फूलका क्या साध्य कि उसकी कोमलताई
 के आगे सांसले कलीका क्या मुंह कि उसके
 मुखड़ेके सामने मुह दिखाय और लाता
 उसके कपोलके देखकर शोकका चिन्ह
 अपने अन्तःकरण पर खाय उस लड़कीके भिन्न
 और कोई लड़कावाला नहीं रखता जब वह
 वृक्ष आराम रंग रूपका युवा अवस्थाकी सीमा
 और लावण्यपर आया और उसके कंवलसे
 गातपर भारीने धरवनाया तब गठजोड़ उसका
 रीत प्रमाण अविश्वक हुआ अर्थात् उससे
 विवाह करनेके लिये देश देशके शाहजादे आ-
 ते हैं और उससे मिलनकी बाज्जा रखते हैं परन्तु
 उसने ऐक प्रतिज्ञाकी है कि (गुल बासनौवर
 चिकर्द) अर्थात् गुलने सनौवरसे क्या किया जो
 कोई उस प्रश्नक उत्तर (महर) अर्थात् विवाह

मूल्यके बदले उसीसे विवाह करेगी और वज्र-
 तसा धन सम्पत्त देवेगी और जो कि उस प्रश्नका
 उत्तर न देसकेगा उसका माथा शरीरके देशसे
 अलग करके गद्दीके नुकाड़पर लटकावेगी जब
 बटोहीके मुखसे यह वृत्तान्त सुना उसी समयसे
 मोहित होगया और मेरे पास आकर बोलने पी-
 टने लगा और वहां जानेकी आज्ञा चाही पहले
 मैंने बहुत समझाया परन्तु बहुत उसने कुछ
 नमाना फिर मैंने कहा कि हे पुत्र जो तेरी औ-
 सीही इच्छा है तो मैं सैना समेत उसके यहां
 जाऊँ और लड़की तेरेवाले मांगलाऊँ जो
 बोह होसी अलहादसे मेरे साथ करदे तो भला
 नहीं तो उसदेशको लूटलाटके उस लड़कीको
 अपने साथ लेआता हूँ शाहजादने ईह बात भी
 नमानी और कहा कि मैं आप जाकर और
 उसके प्रश्नका उत्तर देकर उसको लेआऊंगा हे
 भाई जो कुछ कि लिखनेवालेने कपालसे लिख

दिया है किसी प्रकारसे भिटने नहीं सकता
 निदान मैंने उसको जानेको आज़ादी शाहजादा
 मुझसे बिदा होकर उसदेशमें जापड़ंचा और
 प्रश्नका उत्तर न दे सका तब मिहिर अंगेजने उसका
 माथा काटकरके गढ़ीके नुकाड़ पर लटकवा दिया
 यह समाचार जब मेरे पास पड़ंची रोने पीटने
 लषा और बहुतसा शोक किया और उसके
 वियोगमें धैर्यका बख्तर फोड़ने लगा इतनेमें
 दूसरे लड़केने अपने भाइके शोकसे धवराकर
 मिहिर अंगेजमें मिलनेकी इच्छाकी वृहभी
 मारा गया निदान सातों लड़के मेरे इसी प्रकार
 से एक दूसरेके पीछे उसीके हाथ मारे गये
 और किसीसे उसके प्रश्नका उत्तर बननाया
 तबसे लड़कोंके बादशाहीकी छोड़कर पागल
 होकर इस जंगलमें बास करताहूँ और शोक
 की आगमें जल रहाहूँ जो मुझपर बीता सो
 मैंने सच तुम्हें कह सुनाया शाहजादेने यह समा

चार जब पागलसे सुना उसी समयसे मिहर अङ्गजके प्रीतका सर उसके कलेजेके पार हुआ और उसके मिलनके लिये तड़पने लगा ॥

दूसरी कहानी शाहजादेका आखेटसे फिर आना और मिहर अंगेजके पास जाना और उसके प्रश्नके उत्तर न देनेके हेत मारे जानेके वृत्तान्तमें ॥

इतने विलम्बमें जो आखेटके समयसे भिन्न रहोगयेथे चङ्ग औरसे आकर दूकड़े भये और शाहजादेकी यह अवस्था देखकर बहुत धाव-राये और एक धोड़ा पवनके समान चलनेवाला सजा सजाया लेआये शाहजादा उसपर चढ़कर धरकी आया परन्तु मिहर अङ्गजकी प्रीत उसके हाड़ हाड़में औसी प्रवेश ऊँची और उसके नमिलनेके हेतसे अति निर्वल होता जातार्था निदान यह बात सभीपर खुली गुप्ति भेद प्रकास होगया और यह बात लोगोंने बाद

शाहके सो'हीं जाय निवेदन की कि शाहजादा
 कैसस शाहकी लड़की मिहर अंगेजके प्रीतके
 नदीमें डुबकियां मार रहा है बादशाहन
 यह बात सुनकर कहा कि पहले एक
 पत्र दूतके हाथ मिहर अंगेजके बुलानेके
 लिये भेजा जावे और उसके साथ भारी मोलके
 मोती मणि और भांत भांतके वस्तु जो बादशा
 होंके पठाने योग हैं कई जंठो पर लादकर भेजे
 जावें जो प्रसन्न होकर भेजदे नहीं तो बल्लतसी
 सेना उस देशमें जाकर उसका घरवार लूटकर
 लड़कीको अच्छी प्रकारसे लेआवे' शाहजादेके
 कानमें जब यह बात पड़ची तब बादशाहसे
 निवेदन किया कि यह बात अनहोनी होनी
 नहीं मैं आप जाकर उसके प्रश्नका उत्तर देकर
 उसको लेआता हूं तब सभोंने बादशाहसे कहा
 कि ऐसे समयमें शाहजादेको अकेला भेजना
 उचित नहीं कितने लोग और सेनासाथ देना

अविश्वकहे इस कहानीके कहनेवालेने येा कहाहै कि शाहजादा तहमास जो बादशाहका बड़ा बेटाया वहांसे बिदा होकर आप एक अच्छे घोड़े पर चढ़कर कई जंठ मोति और मणि इत्यादिक साथ ले कर चला जाते र कितेक दिनोंमे कैमूस बादशाहके देशमें जा पहुँचा देखा कि एक गढ़ी जो परबतके समान थी उसके नुक्कड़पर बज्जतेरे बादशाहां और शाह जादेके साथे लटकतेहैं शाहजादेके साथो जितने लोगथे सब देखकर घबराये और शाहजादेकी भी बज्जत समझाया कि इस बातकी अपने मनसे भुला और वृथा अपना जो मत गंवा पर शाहजादेने किसीकी बात नसुनी निदान शाहजादा नगरके भीतर जाकर इधर उधर फिरने लगा फिरते फिरते कैमूसशाहके द्वारेपर जापहुँचा देखा तो एकदका जड़ाऊ उँडेसमेत धराहै और उस ढक्केपर सोनेके पानीसे लिखाहै कि

जो कोई इस नगरमें आवे और मिहर अंगेजके मिलनेकी इच्छा रखताहो इस उँडेको जठाकर ढक्केको बजावे तो मिहर अंगेज उसकी अपने पास बुलावेगी शाहजादा घोड़ेसे उतरकर उँडेको जठाके ढक्केपर ऐसा मारा कि उसकी शब्दसे भूम हिलगई और आकाश कांप उठा नगर भरमें हलचल होगई और कितने लोग ऐकठे होकर शाहजादेको बादशाह पास लेगये शाहजादा रंगरूपमें अति सुन्दरथा बादशाह देखकर शोक करके बोला ओ शाहजादे वैष तुम्हारा अति अल्पहै और अभी इस संसारके कोई विषयसे तृप्त नहीं ऊँचे चाहियेकि इस बातसे अपनेको दूर रखो और मेरी लड़की जो निबुद्धिताइ और सुन्दर रूपके समगडसे जो प्रेम करतीहै उसका उत्तर देनेवाला आजतक कोई नठहरी बहुतेरोंने अपना जीगंवाया इसी प्रकार बादशाहने बज्जतसी सुपरामर्शदी पर शाह-

जादेके मनमें ऐकभी प्रवेष्ट नभई तब बादशाह गुलरुख बेगमको साथले मिहिर अंगजके पास आकर कहने लगे कि ओ अत्याचारी यह कौनसी बात तूने अपने मनमें ठानी है कि वृथा जीवहत्या करती जाती है इससे तुझको कौनसा फल प्राप्त होता है ले अब पूर्वदेशका शाहजादा बज्जतसा धन सम्पत्त मीती मणि इत्यादि कलेकर तेरे मिलनेकी इच्छामें उतनी दूरसे यहां तक आया है उचित है उसको अपना भर्त्ता कर और हम तेरे मा बाप हैं हमारी आज्ञा मानी उचित है और तूने जो प्रतिज्ञा की है सहस्र वर्ष जो उसकी पछकरेगी और लाखों मनुष्यको जो उससे मारेगी तौभी उस प्रश्नका उत्तर न पावेगी इसी प्रकार बादशाह और बेगम बज्ज-तेरा समझाते रहे पर उस कठोरने अपनी हठ न छोड़ी और बोली जो सहस्र वर्ष तक कोई सेरे प्रश्नका उत्तर न देगा तो कदापि विवाह न करूँगी

और अनव्याही मर जाऊंगी निदान जब संसार का उजाला करने हारा सूरज पच्छिम दिशा को गया मिहर अंगेजने शाहजादे को अपने घर में बुलवाकर कहा ओ शाहजादे मेरे यह प्रश्न है कि (गुल बासनौबर चिकर्द) अर्थात् सुलने सनौबससे क्या किया शाहजादे ने चतुराई से जो उत्तर कि अपने मन में ठाना था कहा जब उस अत्याचारी मनकठोरने अपने प्रश्न का यथार्थ उत्तर न पाया तब उसका माथा कटवाकर गद्दी की नुकील पर लटकवा दिया यह समाचार जब शम-शादलाल पोशने सुना चालीस दिन तक रोता पीटता रहा थोड़े दिन पीछे शाहजादा कहमास भी जो उसका भाई था बाप से बिदा होकर मिहर अंगेज के पास गया और वहीं मारा पड़ा ।

तीसरी कहानी अलमासरूह बख्श के जाने की मिहर अंगेज के देश में और उद्यान में पङ्कचना और वहाँ जा के मति

हीन पागल वन्ता और मोहित होना
मिहरअंगेज और बिदा होना उसका
दिलारामसे ॥

निदान छेओ लड़के शमशाद लाल पोशके
इसी प्रकारसे मारे गये सातवां लड़का जिसको
अलमासरुहबख्श कहतेथे रहगया वुह अति
सुखभाव और ज्ञानी और बिद्या और बलमे
पक्का पोढ़ाया ऐकरोज उसने बापको देखा कि
बैठा हुआ लड़कोंके शोकमें हाथ मार मार रो
रहाहै अलमासरुहबख्शने बादशाहकी यह
अवस्था देखकर निवेदन किया कि कैमूस बाद-
शाहकी लड़कीने मेरे भाईयोंको माराहै अब मैं
चाहताहूँ कि वहाँ जाकर अपने भाईयोंका
पलटा लूं और जिस प्रकारसे हूँ उसकी
बिवाह कर लाऊं जब बादशाहने यह बात सुनि
औरभी रोने बिसोरने लगा और कहा हे पुत्र
हमतो अब तुम्हारी आशासे जीतेहैं तुमभी जान

बूझकर अपने मरने की चेष्टा करते ही शाह-
 जादेने फिर निवेदन किया कि पिता जब तक मैं
 उस अत्याचारी और हत्यारानी को अपने अधीन
 न करूँ तब तक हमारे मन को सुख नहीं और
 इस काम की मैं बहुत सहज समझता हूँ निदान
 बहुत सी हट कर कर जाने की आज्ञा ली और
 वहाँ से प्रस्थान कर थोड़े दिन पीछे मिहर अंग्रेज
 के नगर में जा पहुँचा उस गढ़ी के रुकड़ पर
 बहुत से माथे बादशाह और शाहजादों के लटके
 लूटे देखे और अपने भाईयों के मुण्ड पहचान
 कर बहुत सा रोया फिर नगर के भीतर जाय
 चहुँ और देखते भालते बाहर निकल आया
 किसी गाँव में एक बड़े गंवार की स्त्री ने जिसका
 वेष एक सौ बीस वर्ष का हुआ था और उसने
 लड़के का मुँह कभी न देखा था शाहजादे को
 देखते ही बहुत प्रसन्न हुई और शाहजादे को
 अपना लड़का बनाया शाहजादा वहाँ ठहरा

और घोड़े को घोड़साल में बांधा और जो कुछ रूपैया पैसा साथ रखता था उसमें से थोड़ा उन दोनों को दिया और कहा कि हमारे यहां किसी से रहने का समाचार किसी से न कहियो फिर शाहजादे ने कपड़े पहने और प्रातः समय उठकर नगर में गया पर सदा इसी सोच में रहता था कि यह भेद क्योंकर खुले और इसके प्रश्न का उत्तर क्योंकर दीजिये और किस भाँति से अपने भाईयों का पलटा लीजिये बड़तसा खोज सन्धान किया पर उसका कुछ पता कहीं से न मिला एक दिन अपने मन में यह बात ठानी कि मिहर अंगेज को देखा चाहिये कि इस कठोर प्रीति में सैकड़ों बादशाह और शाहजादे ने अपना जी गंवाया है और शोक का चिह्न अपने अन्तःकरण पर ले गये हैं विचार करता हुआ मिहर अंगेज का द्वार पर जो उसकी रहने का घर था जा पहुँचा देखा कि वहाँ एक बड़ा टुकड़ा है और अंचभेका द्वार बनाया है और बहुत से द्वारपाल द्वार पर बैठे हैं शाहजादे ने बड़त

चाहा कि किसी भांत भीतर जावे परंतु कोई
 ठव जानेका दृष्टमें न आया तब धवराकर उद्या
 नकी और चला और ईश्वरका ध्यान करने
 लगा कि किसी प्रकारसे अपने अभिप्रायकी
 पहुंचूं इसी सोचमें था कि अचानक एक
 (नहर) दिखाई दी कि जिसका पानी बाहरसे
 उद्यानके भीतर जाता था तब शाहजादा कपड़े
 उतार नंगा होकर उसी नहरमें पैठकर उद्यान
 में गया एक बड़ी वहां बैठकर कपड़े सुखाये
 फिर वही वस्त्र पहनकर उस उद्यानकी सोभा
 देखने लगा कि हरियाले पर उसके नहरका
 पानी चलता और जीयका पानी सब ओरकी
 दौड़ता है बुल बुल चुह चुहाती है और फूल
 खिल रहा है भांत भांतकी पक्षी कलोलकार रहे है
 और नाना प्रकारके फल फूलकी पेड़भूम रहे है
 ऐसा सोभावान उद्यान था कि जिसका बर्नन
 करनेसे एक और पुस्तक बन जावे और खर्ग
 आराम उसके सामने कुछ नया शाहजादा
 फिरता चलता उस घरके निकट कि जहाँ

मिहिरअंगेज बैठीथी जापङ्गचा और दूरसे
 देखा सच तो योंहै कि असा रंग रूप मनुष्य
 वर्गमें तो क्या अपसराओंमेंभी नहीं और सामने
 उसके एक बिछौना संग मरमरका कि उसकी
 उज्जलताईका बर्नन बातींसे बाहर और एक
 कुण्ड ठण्डे पानीसे भरा दरपनके समान चम-
 कता हुआ देखा शाहजादा एक घड़ी वहां
 बैठकर फिर फुलवारीकी सोभा देखने लगा
 और मालियोंसे छिपकर रातउसी उद्यानमें
 काटी जब सूर्य उदय हुआ शाहजादा आपको
 पागल बनकर फुलवारीकी सोभाकी देखता
 भालता रहा कि इतनेमें एक जगह देखी वहां
 कई अपसराओं टहल रहीहैं और उस जगह
 रेशमी बिछौने पर एक सिंहासन जड़ाज धराहै
 और उसपर एक नायका बैठीहै कि जिसके
 उजालेसे सारा उद्यान उजालाहो रहाहै और
 उसके केशकी सुगंधकी लपट आकाशतक दूतोंकी
 मज्जाको सुगन्ध कर रहीहै शाहजादेने बुद्धिसे
 जाना कि मिहिरअंगेज यहीहै सचहै कि ईश्वरने

जिसको रूपदिया हो क्यों नहीं सँकाड़ी जीको
 पतङ्गके समान अपने दीपसे मुखड़ेके आस
 पास फिरावे इसी ध्यानमेधा कि एक लड़की
 सुनहरा (प्याला) अर्थात् कटोरा हाथमें लिये
 ऊँचे पानी लेनेको कुण्डतक आई और चाह-
 ती थी कि प्यालेको पानीसे भरे इसमें शाहजादे
 की छाया जो वृह वृक्षकी ओठमें छिपकर देख
 रहा था पानीमें देखकर डर गई और अपने
 अन्तःकरणके प्यालेका बेसुधीकी मददसे भरकर
 प्यालेको कुण्डमें गिरा मनमें कहने लगी कि यह
 देवकी छाया है वा मनुष्यकी निदान रोती और
 कांपती ऊँई आई जब औरोंने उसकी यह अ-
 बस्था देखी उसे मिहरअङ्गेजके सींहीं ले गई
 मिहरअङ्गेजने पूछा कि तुम्हें क्या हुआ था तब
 उसने कहा कि बलेयांतूं मैं पानीके लिये कुण्ड
 पर गइ थी पानीमें एक पुरुषकी छाया देखा
 भयखाकर गिरी और हाथसे प्याला पानीमें
 गिर गया फिर मिहरअङ्गेजने उसके निश्चयके
 लिये दूसरी एक सहेलीको भेजा वह भी उसी

प्रकारसे पानीमें छाया देखकर बिरहकी आगमें
 जलने लगी और रोती ऊई मिहरअंगेजके पास
 आई कि ओ शाहजादी नहीं जानू कि यह
 किसी मनुष्यकी छाया है वा अकाशसे चन्द्रामा
 भूमिपर उतरा है अथवा कोई तारा टूटपड़ा है
 इस बातके सुनतेही मिहरअंगेजका जी हाथसे
 गया और उसके देखनेकी अभिलाषा मनमें
 बज्जत ऊई और मयूरकी भांत चलतीर कुण्ड
 तक जापहुंची शाहजादेकी छाया पानीमें
 देखकर उसके चाहतकी हाटमें अपने अन्तःक
 रणकी पूंजीको खोबैठी और व्याकुलहो दाईसे
 बोली कि इसमें कौन छिपा है खोजकरके उसको
 मेरे पास ला जो उसके देखनेसे अपने मनको
 सुख दंदाई चहु और देखती भालती चली
 जातीथी निदान जहां शाहजादा छिपा खड़ाथा
 उसकी दृष्ट पड़गई देखा तो ऐक पुरुष जिसका
 मुखड़ा सूर्यके समान चमकता और बदन अति
 कोमलथा दृक्की ओटमें छिपा खड़ा है शाहजा-
 देने दाईको देखकर भागनेकी इच्छाकी पर

रास्ता नपाया तब चट अपने तर्ई पागल बनाया
 दाई निकट आकर बोली कि ओ पागल कहां
 जाता है हमारी शाहजादीने तुम्हें बुलाया है
 वह उत्तर कुछको कुछ देने लगा निदान दाई
 उसका हाथ पकड़के लेआइ मिहरअंगेजने
 उससे पूछा कि तू कौन है और कहांसे आया
 और क्या चाहता है पर वह उसका उत्तर उ-
 ल्टा पुल्टा देताथा और यही कहताथा कि मैं
 भूखा हूं और मुझे किसीसे क्या काम है और
 क्या कहूं हिरन बकरी होगया और मखो भैंस
 बनगइ रूइका पहाड़ पानीकी बौछाड़से गल
 गया और ओसके बरघनेसे भूम पिघल गया
 अंठकी बिल्ली खागई बिल्लीको छूंदर चबागइ
 ऐसी उल्टी सुल्टी बातें सुनकर मिहरअंगेज
 हंसकर बोली कि बड़े शोभकी बात है ऐसा पुरुष
 मतिहीन होजावे जो मिहरअंगेज शाहजादेका
 रंगरूप देखतेही बाउली होगईयो और उसकी
 नैनोंकी कटारीसे घादल होकर सभीसे बोली
 कि यह पागल है कोई इसे नछेड़े और जिस

वस्तु पर इसकी इच्छा चले दीजियो यह कहकर
 उस पागलकी साथले घरमें आई उसने कहा कि
 तू यहांसे कहीं नजाइयो और जो जीचाहे सो
 मांगियो और खाइयो किसी बातकी चिन्ता मत
 करना तब शाहजादेने अपने मनमें कहा कि
 इस बातकी अभी इससे कुछना अच्छा नहीं
 पहले दिलराम सहेलीसे जो पहले मेरी छाया
 देखकर मुझपर मोहित हुईथी और अबतक
 मेरे मिलनेकी बांछा रखतीहै इसीसे इस बातका
 सम्भान किया चाहियेइतनेमें एक दिन दिल
 राम शाहजादेको अकेला पाकर निकट आई
 उसके पांवपर माथा रख बिनतीसे कहने लगी
 कि ईश्वरने तुम्हको ऐसा रूप दियाहै बरं और
 भी अधिक होवे मेरा मन तेरे लिये तड़पताहै
 और जी कुढ़ताहै मैं चाहतीहूँ कि तू अपने
 भेदसे मुझे जतावे कि तू कौनहै और कहासे
 आया और यहां आनेका प्रियोजन क्याहै और
 इस पूछनेसे मेरा अभिप्राय यहहै कि तेरे चित्त
 बनके बानने मेरे कलेजेको छेद डालाहै और

अभिलाषाके सरने मेरे अन्तःकरणके ऋगको
 अहेर किया है जो तू मुझे अपने साथ यहाँसे
 लेचले तो बड़ी बात है और जो तू चाहेगा सो
 दूँगी वृह तो ऐसी बातें करती थी पर शाह
 जादा पागल पनेकी बातोंसे उत्तर देता था इस
 लिये कि कोसी प्रकारसे मेरा यह भेद खुल
 नजावे तो दया लज्जित होना पड़ेगा जब दिला
 रामने अपने बातका उत्तर नपाया और छल
 छिद्र उसका कुछ काम नआया तब रोती विसो
 रती अपने घर आई और उसके पागलपने पर
 सोच करती रही और सगरी रौने रोने पीठनेमें
 काटी दूसरे दिन फिर उसके पास आकर पतङ्ग
 के समान चहुँ ओर फिरने लगी इतनेमें मिहर
 अंगेजने शाहजादेको बुलाया और बात चीत
 करने लगी दिलारामभी छिपछिपकर देखा
 करती थी मिहर अंगेज ताड़गई कि दिलारामभी
 इस पागल पर मोहित है तब दिलारामको बुला
 कर बीली कि आजसे मेरे इस पागलकी रख
 वाली और खाने पीनेका उद्योग तूही किया

कर जब दिलारामने यह आज्ञापाई फूलों नस
 माई और चित लगाय उसका काम काज करने
 लगी एक दिन दिलाराम पागलकी अपने
 घरमें लेजाकर बहुतसी बातें इधर उधरकी कर
 ईश्वरकी मध्यस्थ माना इस लिये कि वह अपना
 भेद प्रकाश करे तब शाहजादेने अपने मनसे
 कहा कि इसमें प्रीतकी सुगन्ध पाई जातीहै
 इससे अपने भेदके कहनेमें कुछ भय नहीं फिर
 बोला तुम बज्जतसा हट करतीहो इस लिये
 अपना भेद तुमसे कहताहूँ मेरा अभिप्राय यह
 है कि (गुल बासनोबर चिकर्द) अर्थात् गुलने
 सनोबरसे क्या किया इसीकी खोजमें इतनी बि-
 पत्ते उठाता हुआ यहांतक आपहुँचाहूँ और
 तेरी शाहजादी बज्जतसे बादशाह और शाह
 जादेकी मुण्ड काटकर लटका देतीहै जो तू इस
 प्रश्नकी वृत्तान्त जानती हो तो सुझे बता तब
 दिलारामने कहा जो तू मुझसे व्याहकरे तो मैं
 इस प्रश्नका समाचार जितना जानतीहूँ तुझसे
 कहूँ शाहजादेने कहा जो मेरा काम तेरे हाथ

से बनपड़े तो मैं निसन्देह तुझसे व्याह करूँगा
 जब दिलारामने अपनी पत्नी पोड़ी करली तब
 कहा कि मैं इतना जान्ती हूँ कि मिहरअंगेजके
 बैठनेके सिंहासनके नीचे एक (जंगी) अर्धात्
 हबशी रहता है उसने यह बात उसकी सिखाई
 है और वह जंगी वाकाफ देशसे भागकर आया
 है इतना मैं जान्ती हूँ अब तुझको चाहिये कि
 उस देशमें जाकर सब समाचारका सन्धान करे
 यह सुनकर शाहजादा बहुत सोच करने लगा
 तब दिलारामने कहा जो तेरी दृष्टि होवे तीमें
 मिहरअंगेजको ऐसा मद पिलाऊँ कि उसको
 कुछ सुध बुध न रहे और तू अपना पलटाले
 शाहजादेने कहा कि घोखा देकर किसीको हत्या
 करना उचित नहीं जबतक कि मैं वाकाफ
 देशमें न जाऊँ और सब वृत्तान्त न जानूँ तबतक
 मेरे सुख नहीं होगा ले अब मैं जाता हूँ तू धैर्य
 करके रह जब वहांसे लौटकर आऊंगा तेरी
 बाज्जा पूरा करूँगा यह कहकर दिलारामसे
 बिदा हो उस बूढ़े गंवारके घरमें आया और

उनसे कहा कि मैं अब बिदेश जाता हूँ तुम लोग
यहां रहो और मनमें कोई चिन्ता नकीजियो ॥

चौथा कहानी शाहजादेका बिदा होना
दिलारामसे और बाकाफ देशका रास्ता
बताना एक बूढ़े अन्तर जामीका और
हिरन बना शाहजादेका लतीफः
बानोके टोनेसे ॥

इस कहानीके व्याख्यान करनेवाले यों कहते
हैं कि शाहजादा घोड़े पर बैठ नगरसे बाहर
चला पर नहीं जानताथा कि बाकाफ किस
ओर है और कौनसा रास्ता है इसी सोचमें धुल
धुलकर दुर्बल हुआ जाताथा घोड़े दिनोंमें ऐसा
निर्बल हो गया कि घोड़े पर बैठनेकीभी सामर्थ्य
नरही घोड़ेकी बागडोर थांभेहुवे पैदल चला
जाताथा अचानकचक बाटमें एक बूढ़ा अन्तर
जामी हरावल धारण किये एक लाठी हाथमें
लिये हुवे दिखाई दिया शाहजादा देखतेही
बहुत प्रसन्न हुआ और दूरसे प्रणाम किया
उसनेभी प्रणामका उत्तर दिया और पूछा कि

तू कौन है और कहाँ से आता है तब शाहजादे ने कहा कि मैं वाकाफ़ को जाया चाहता हूँ उसका रास्ता नहीं जानता कि किस ओर से जाना होगा शाहजादे को देखकर बड़त समझाया कि वाकाफ़ का रास्ता अति कठिन है जो जनम भर उसकी खोज करेगा तौ भी न पड़ेंगे तू इस बात से न पड़ और अपने घर को जा बड़तेरा समझाया पर शाहजादे ने कुछ ध्यान न धरा और यही कहने लगा कि जिस प्रकार से हो मुझे वहाँ का रास्ता बताइये जब उस अन्तरजा मीने देखा कि किसी भाँत से यह नहीं समझता तब बोला कि नगर से बाहर हुवे पर तुम्हको दोरास्ता मिलेगा चाहिये कि दाहने रास्ते को जावे बाये रास्ते कदापि न जाइयो और मध्यपथ को भी छोड़ दीजियो ऐकदिन ऐकरात चलनेकी पीछे प्रात समय ऐक उंचा (मीनार) दिखाई देगा उसपर ऐक पट्टी (संगमरमर) की (कूपी) अक्षरोंसे लिखी है उचित है कि उस पट्टी पर जो कुछ लिखा है उसके प्रमाण कामकरे और

उस रास्तेके भिन्न दूसरा पंथ नलीजियो शाह
 जादा यह बात सुनकर बहुत हर्षित हुआ
 और उसके पैरचूमे और वहांसे चला ऐकदिन
 रात चलनेके पीछे उसी ठकानेपर जापहुंचा
 और उस लिखेको देखा उसका यह अभिप्राय
 था कि बटोहीको उचितहैकि दाहने रास्तेको
 जावे जो बाये'रस्तेको जावेगा तो थोड़ा लेश
 पावेगा परंतु शीघ्र अपने अभिप्रायको पहुंचेगा
 और मध्यपथ तो ऐसा भयानक और कठिनहै
 जो सहस्र मनुष्य ऐकत्र होयके जावे तो ऐकभी
 उधरसे नफिरे और वही रास्ता वाकाफके दे-
 शको जाताहै शाहजादा पढ़कर महिले तो घब-
 राया फिर ईश्वरका ध्यानधर और साहसकरके
 बीचका रास्ता लिया दूसरे दिन ऐक बड़ा पर्वत
 दिखाई दिया कि वृक्ष उसके आकाशतक पहुँ-
 चेहैं और उससे' एक उपवन हराभरा देखकर
 वहां जापहुंचा जब द्वारके निकट आया देखा
 तो वृहद्वार संग मरमरसे बनाहै और ऐक
 जंगी'ऐसा कालवर्ण कि जिसके कालेपनेसे सारे

उद्यानमें अंधेरी छाई है और उसके उपरके
 होंठ नाकके नथनेंसेभी उपर चढ़े हैं और नीचे
 के धुत्नेतक लटकते हुवे ऐक पत्थर चक्कीके पाट
 समान सौमनका भारी ढालके बदले अनारकी
 गाछसे लटकाये और तलवार कि वुहभी पचास
 मन लोहेसे घट नथी शमशादके तरुवरसे टांगे
 और कई पशुओंके खालको ऐकलसीकर लंगोट
 पहने और ऐक सीकड़ लोहेकी जिसके घेरेसे
 हाथी आवा गमन करसके पट्कावांधे द्वारपर
 पत्थरसे सिरानादिये हुवे सोता है शाहजादा
 उसके निकट आकर बाग अपने घोड़े की जंगीके
 सिराने बांधी और आप उस उद्यान की सोभा
 देखने लगा वहांके टूटकी डालियांमतवालोंके
 समान झूम रही थीं शाहजादा उस फुलवारीके
 मोठेपवनके झोकोसे अति प्रसन्न हुआ और
 इधर उधर देखने लगा इतनेसे क्या देखता है
 कि बहुतसे हरिन वहां चर रहे हैं जड़ाऊ सिंगी
 टियां जिनके सिंगीपर मढ़ी हुई और (कार
 चौबीकी) झूलें पीटपर पड़ी हुई और (जर

बाफतकी) कपड़े उनके गलेमे बंधे थे हरिन रंग
 रूपमें अच्छे चलते फिरते थे शाहजादा यह
 चमत्कार देखकर अश्चर्य करने लगा कि इस
 उद्यानका स्वामी कौन है दृष्टमे नहीं पड़ता सब
 हरिन हाथ पांव आंखोंके हिलानेसे मुझे
 जाताते थे कि दूधर न आवें परमैं उनका कहना
 कुछ न समझा था वरं मैंने जाना कि मुझे देख
 कर कलोलेंकर रहे हैं निदान शाहजादा फिरता
 चलता एक घरके निकट आपङ्गचा बहोंकी
 हरीयाली सोने रूपेकी भांत भलक रही थीं
 और फूलोंकी लपट चहुं ओरसे आरही थी
 शाहजादा एक झरोखेसे उस घरके भीतर घुस
 के क्या देखता है कि एक स्त्री अति सुन्दर कि
 चन्द्रमा जिसके देखनेसे लजाय खिड़कीसे माथा
 निकाले दूधर उधर तकरही है जोही दृष्ट शाह
 जादेपर पड़ी तब उसकी रूप पर मोहित होगई
 और उसकी प्रीतमे बेसब होकर दारिसे बोली
 कि उसको मेरे पास बुलाता पूछूं कि तू कौन है
 और उसका चांदसा मुखड़ा देखकर भिचककर

रहगई घड़ी एक पीछे बोली कि हमारी बिबिने
 आपको बुलाया है मैं उस दाईके साथ होलिया
 और उस घरके भीतर गया वहांकी सजावट
 देखकर जाना स्वर्ग आराम यही है एक सिद्धा
 सनभी वहां धरा है और (जरबफ्तके) बिछौने
 जगह जगह बिछे हैं पटापटोके परदे सुनहरी
 डोरियोंसे खिचे हैं और वुह चातुर जिसकानाम
 लतीफःबानोथा उस सिद्धसन पर बैठा है शाह-
 जादा यह सब देखकर अपने मनमें सोचताथा
 यह कौन है इतनेमें उसने शाहजादेको देख
 तेही बड़ी चाउसे उठकर हाथ पकड़के सिद्धा-
 सनपर अपने पास बिठलाया और बहुतसी
 मोठी मोठी बातें जो लुभानेकी करके बोली कि
 तू कौन है और कहाँसे आया और कि घरको
 जावेगा शाहजादेने अपना सब ब्योरा आदसे
 अन्ततक कह सुनाया तब लतीफःबानो बोली
 क्यों दृथा अपना जो गंवाया चाहते हो किसबास्ते
 कि अबतक कोई वहांतलक नहीं पड़चा उ
 चिंत तो यों है कि अपने हाथकी मरे गलेमें डाल

और ईश्वरका स्मरण कर कि मुझसी सुन्दर
 स्त्रीका मिलन तेरे कपालमें बदाया और जो
 बात तूने अपने मनमें ठानी है वहभी होजाय
 गी और कैमूसशाहकी उसकी लड़की मिहरअ
 ङ्गेजसमेत तेरे पास लादूंगी तब जो तेरी इच्छा
 हो सो कीजियो ऐसेर धूत्ते और भुलावेको
 बातोंसे शाहजादेको फुसला रहीथी शाहजादे
 ने कहा कि औ लतीफबानो मैं तेरे साथ प्रतिज्ञा
 करता हूँ कि जबतक वाकाफमें नजाऊँ और
 कैमूसशाहकी लड़की मिहरअंगेजको अपने
 अधीन करके घोड़े के टापके तले नरौंदूँ और
 उसका मास कुत्तों और उपरबालियोंको न
 खिलाऊँ तबतक संसारका कोई सुख भोग
 नकरूँ जब उस कामसे निश्चिन्त ऊझा तब
 तुझसे व्याह करूँगा जितना लतीफबानो हठ
 करतीथी उतनाही वह अलग ऊँचा जाताथा
 और उसके बातमें कान नलगाताथा तब उ
 सने अपने मनमें वह बिचारा कि इसको किसी
 प्रकारसे मर्द पिलाया चाहिये उसने यह विसुध

होगा और जो कहूँगी सो मानेगा और सीरी
 अभिलाषा पूरण करेगा बोहों ऐक सहेली को
 जताया उसने सुनहरे पाचमें मद भरकर लाय
 उपस्थित किया लतीफःबानोने शाहजादेको
 दिया शाहजादेने कहा कि पहिले आपको पीना
 उचित है उसने शाहजादेको कहनेसे पहला पाच
 अपने होंठोंसे लगया और दूसरा पांच भरकर
 शाहजादेको दिया उसनेभी पीलीया लतीफःबा
 नोने इधर मद पानका भभेला मचाया उधर
 गाने बजानेका चरचा फैलाया कई अपसराये
 कि जिसके देखनेसे चन्द्र और सूर्य लज्जा पावें
 और उनकी घूंघरयाले बिखरे लड़े बाल देखने
 वालोंका अन्तःकरणको अँचे आय उपस्थित लड़े
 और बाजेका स्वर भिलाकर जचे गलेसे गाने
 लगीं जो उस समय तानसैनभी होता तो अपनी
 तान भूल जाता और बैजूबाउरा बाउरा बन
 जाता निदान गाने बजानेका ऐसा समां बंधा
 कि सारा घर गूंजने लगा इन्द्रका अखाड़ा
 उसके सामने मध्यम पड़े गया इसी भांत तीन

दिनरात जमघट रहा इसमें खतीफःबानोके
 अन्तःकरणकी अंगीठीमें शाहजादेकी प्रीतकी
 आग दूनी भड़कने लगी पर शाहजादेकी चाल
 छालसे मन भलनथी कुछ बस नहीं चलताथा
 चौथे दिन शाहजादेने कहा कि अब सुभो बिदा
 कीजिये क्यों कि बज्जत दूर जानाहै और तुम्हारी
 प्रीतकी आग हमारे मनकी खलिहानमें भड़क
 रहीहै शीघ्र वहांसे लौटकर तुम्हारे निकट आ
 जङ्गा और मिलनकी फुलवारीसे अपने बाब्बुकी
 फुल चुनूंगा और तुम्हारे देखनेके ठंडे पानीसे
 अपने जले भुने जूवे कलेजेकी प्यासको बुझाऊँगा
 जब खतीफःबानोने देखा कि शाहजादा किसी
 ठबसे नहीं फूसलता तब दारूँसे कहा जो डि-
 बिया (माजून) की आलेपर धरीहै लेआ दारूँ
 लेआई और धीड़ीसी शाहजादेको खिलारूँ
 गलेसे नीचे उतर तेही शाहजादा बेसुध होगया
 तब उसने ऐक लकड़ी जो सांपकी समानथी
 निकालकर और कुछ मन्त्र पढ़कर शाहजादेके
 मेंढेपर ऐसी मारी कि शाहजादा भूमिपर

गिर पड़ा और गिरतेही हरिन बन गया जब
 शाहजादेने देखा कि मेरा रूप पलट गया तब
 मनही मन पचताने लगा कि अब क्योंकर छुट
 कारा पाऊँ निदान लतीफःबानोने उसी समय
 सुनारको बुलाकर जड़ाऊ सिंगौटियां मढ़वाईं
 और एक कपड़ा टोनेका उसकी गलेमें बंधवाया
 और सब हरिनोंके साथ चरनेको छोड़ दिया
 शाहजादा यद्यपि हरिन बन गयाथा पर सुध
 बुधमें उसकी अन्तर नथा परंतु इसी सोचमेंथा
 कि अब क्योंकर यहांसे भागिये और भागूं तो-
 रास्ता किधरहै और ऐसा नही कि बाधके मुखमें
 पड़ूं और यह जीवन वृथा जावे ॥

पांचवीं कहानी पहले रूपमें आना
 शाहजादेका जमीलःबानो का सर और
 धनुष और अकबर सुलैमानी नाम एक
 तलवार शाहजादेको और जाना शाह-
 जादेकी वहांसे और व्याकुल होना
 जमीलःबानोका उसकी बियोगमें और

पहुँचना शाहजादेका ऐक परपटमें
और बाधसे मिलनके वृत्तान्तमें ॥

निदान शाहजादा सोच सङ्कोच करता ऊँचा
उस फूलबारीमें चरा करताथा जब इस प्रकारसे
दस बारह दिन बीते ऐकदिन फिरते फिरते
उस उद्यानके कोनेमें पहुँचा भीत वहाँकी
नीची थी ईश्वरका ध्यानकर ऐसी चौकड़ी भरी
कि बाहर निकल पड़ा और मनमें विचारा कि
अब होनी होसोही फिर देखा कि वही फूलवा
रीहै जिसमें रहताथा तब सोचा कि यह आश्चर्य
व्यापारहै इसी प्रकार सात बेर बाहर निकला
पर वही दृष्टमें आताथा निदान ऐकदिन ऐक
जगहपर पहुँचा वहाँ ऐक झरोखा दिखाई
दिया वहाँसे आगे बढ़ा तो ऐक उपवन दृष्ट
पड़ा शाहजादा वहाँकी सुगन्धसे अति प्रसन्न
ऊँचा और दूधर उधर फिरने लगा इतनेमें
क्या देखताहै कि ऐक बड़ा धर जिसमें सहस्र
खिड़की पर सब द्वार बंदये ऐसी सुहानी फूल
वारी और ऐसी खिड़की जिसके देखनेसे मनुष्य

भिचकवार रहजावे देखने लगा और अपने
 मनही मन कहताथा कि देखिये ईश्वर अब कौन
 नाच नचाताहै इतनेमें एक झरोखा उस घरका
 खुला देखा और एक अबला अति सुन्दर मृग-
 नयन गात उसका फूलकी पंखड़ियोंसेमी कोमल
 उसकी रूपकी उज्जलताई और चमक देखकर
 चन्द्रमाको चकाचौंध लगजाय ऐक जड़ाऊ सि
 ङ्गासन पर बैठी माथा निकाले तक रहीहै दिखा
 ईदी कि जिसकी रूपकी जोतसे सारा घर उजाला
 हो रहाहै इतनेमें उसकी दृष्ट हरिन पर पड़ी
 तब शाहजादा अपने मनही मन सोच करने
 लगा नजानिये कि यहभी कोई छली वा कपटी
 होगी कि यहां रहतीहै परंतु शाहजादा उसके
 सुन्दर रूपका मोहित होकर तक रहाथा उसने
 देखा कि यह हरिन अति सुन्दरहै किसीका
 पाला हुआ होगा नजानिये कहांसे भाग आ
 याहै पर उसका उस हरिनके पकड़नेकी
 अत्यन्त इच्छाभई और दार्दसे बोली कि इस
 हरिनकी जो कोई पकड़ेगा यह मीतीका हार

जो मेरे गलेमें है उसको दूँगी तब दारू थोड़ीसी
 घास हाथमें लेकर और उसपर कुछ मन्त्र पढ़
 कर दूरसे दिखाने लगी शाहजादा घासको देख
 कर भूखेकी नाही निकट आने लगा दारूने जब
 देखा कि यह हरिन बड़ा ढीठ है खानेकी खाल
 चसे मेरे निकट आता है तब दारू धीरे धीरे पांव
 उठाये ऊँचे औरभी निकट आई और रेशमी
 डोर पढ़ी ऊँई जो उसके गलेमें पड़ी थी पकड़
 ली जब उसने यह व्योरा देखा भारोखेसे नीचे
 उतर कर देखने लगी निदान जमीलःबानो हरि
 नकी छुरि घायी ऊँचे अपने बैठनेकी जगह पर
 ले आई और उसे बिठा कर अच्छे फल अपने
 आंचलमें भरकर हरिनको खिलाने लगी वृह
 पुरुष षट्पाकार अति भूखाया अवाकर खाया
 पानी पीके मग्न हुआ फिर जमीलःबानोकी
 जाँघपर माथा धरकर लेठा जमीलःबानोभी उस
 की ढीठपनेसे बहुत प्रसन्न हुई और धीरे धीरे
 अपने कोमल हाथ उसपर फेरने लगी और
 दारूसे बोली कि ऐक डोरी (जरबफ्त) की

लेआ दाई लेआई जमीलः बानोने उस हरिन
 को अपने सिङ्गासनके पाटीके साथ इस भांतसे
 बांधा कि सिङ्गासनपर बैठनेसे वह हरिन गलेसे
 लगा रहे इतनेमें उस हरिनकी आंखोंसे आं
 सुबहने लगा जब दाईने देखाकि हरिन रोताहै
 तब जमीलः बानोसे बोली कि आपका हरिन
 आंखोंसे आंसूबहाताहै यह बड़े अचम्भेकी
 बातहै कि पशु इस प्रकारसे रोवे जमीलः बानो
 इसबातके सुनतेही अचम्भा करने लगी और
 हरिनके पास आकर देखने लगी हरिननेभी
 जमीलः बानोको देखकर अपने माथेकी उसकी
 पांवपर डाल दिया और रोनेलगा जमीलः बानो
 उसकी अंगपर हाथ फेरने लगी और बज्जतसी
 दारस देकर कहने लगी कि ओ प्यारे किसवास्ते
 रोताहै वह हरिन औरभी अधिक रोने लगा
 और माथा उसकी पैरोंपर मलने तब जमीलः
 बानोने बुद्धिसे जाना कि यह काम बुआ लतीफः
 बानोकाहै जो मनुष्यको पशु बनाकर रखतीहै
 तब हरिनसे कहा तू धैर्यधर तुझको अभी

अपने रूपमें लातीहूँ यह कहकर दारिसे बोली कि (माजून) की डिविया जड़ाऊ जो उस आलेपर रखीहै लेआ दारिसे आई तब जमीलः बानोने नहाकर सुथरे कपड़े पहने और उस हरिनकोभी नहला धुलाकर थोड़ीसी माजून उस डिवियामेंसे निकालकर खिलादी खिला तेही वुह हरिन बेसुध होगया तब उसने ऐक छड़ी बिछौनैके नीचेसे निकाल मन्त्र पढ़कर उसके मेंढेपर लगाई छुआतेही हरिन भूमिपर गिरपड़ा और लोटपोटकर अपने पहिले मनुष्य रूपमें आया और वुह डोरी और कपड़ा और मणि जो सिंगोटियोंमेंथा अलग होगया तब शाहजादा ईश्वरका धन्यवाद करने लगा और जमीलःबानोसे बोला जो आपकी सहायता और दयासे छुटकारा पाया ऐसी जीभ कहाँसे लाऊँ कि तुम्हारे उपकारका गुण गाऊँ बाल बाल मेरा आपकी गुण और उपकारका स्तुति करनेवालाहै तब उसने शाहजादेको अच्छे सुथरे कपड़े पहनाये तब तो रूप शाहजादेका

ऐसा चमका जैसे चन्द्र भूमि पर उतरा तब तो
 जमीलबानो और भी अत्यन्त मोहित हो कर
 पूछने लगी कि सच कहिये आप कौन है और
 नाम आपका क्या है और किसलिये आपका
 आना हुआ और लतीफबानोंके जालमें क्यों
 कर फंसे थे तब शाहजादेने अपनी बारता आदसे
 अन्ततक सब कह सुनाइ वह सुनेसे इस समा-
 चारके बोली कि ओ अलमासरुहबख्श मेरे
 अन्तःकरणके सुख देने हारे अभी चौथाई
 रास्ता वाकाफका नहीं आये हो कि इतनी
 विपत्ते उठाई अभी बज्जतसे रखे कठिन और
 भयानक बीचमें हैं इसवास्ते तुमको उचित है कि
 इस दृष्टा उद्योगमें अपने तर्ई न डालो और
 देखबाघके हाथ अपने जीको मत गंवाउ इस
 दुखियाके घरको अपना स्थान समझकर यहीं
 रहो और जीवनके पात्रको सुख चैनके मदसे
 भरी और मैं तुम्हारी सेवा टहलजे लौड़ीकी
 समान दिनरात करूंगी शाहजादेने कहा कि
 यह सब बात ठीक है आपने ऐसा ही उपकार

सुभसे किया है जो मेरे चमड़े की जूती बनाकर पहनिये तो उचित है क्यों कि आपने उस हत्या की हाथसे सुभे बचाया और पुनर्बार मृत्यु वरु सुभे पहनाया परन्तु आपसे मैं यह आशा रखता हूँ कि थोड़े दिनों के लिये सुभे विदा कीजिये वाक्काफ देशसे लौटकर आपके निकट आ पड़ूँगा तब जो आज्ञा कीजियेगा मैं उससे बाहर नहोऊँगा अब वहाँ पड़ूँचने का उद्योग जो आपसे बन पड़े सो कीजिये जो जोता फिरूँगा फिर आपके पैर चूमूँगा औ तुम्हारे साथ व्याह करूँगा और अपने देशको लेकर सुख चैनसे तुम्हारे साथ रहूँगा जमील बानोने जब देखा कि शाहजादा किसी प्रकारसे नहीं मानता और अपनी हट नहीं छोड़ता तब बोली कि अच्छा ईश्वर तुमको वहाँ तक भली भाँतसे पड़ूँचावे और एक सर धनुष और एक तलवार जिसकी अकबर सुलैमानी कहते हैं जो बादशाहों के पास भी नहीं उसका गुण यह है कि पहाड़ पर भी मारिये तो जैसे साबुनसे तार

निकलता है पार होजावे और ऐक कटार तैमूसी
 उसका गुण यह है कि वह जिसके पास हो और
 उसपर कोई सहस्र मनका बोझा डालदे तो
 पैसा भरभी जाना नजावे और कोई उसपर शस्त्र
 करे तो बदन पर उसके चिह्न भी नपड़े यह
 कई वस्तु तुम्हारे साथ देता हूँ इनको भली प्रका
 रसे अपने पास रखियो जो बिदेशमें तुम्हारे बड़े
 काम आवेजा और यहां से जिस जगह कि तुम
 पहुंचोगे वहां से गरपंखकी सहायता भिन्न उस
 देशमें पहुंचना अति कठिन है किसवास्ते कि
 वाकाफ़के रस्तेके बीचमें सात नहियां हैं सगरे
 पृथ्वीके बादशाह ऐकठे हैं तौभी सहस्रवर्षतक
 उसके ऐक नदीसे पार नह सकेड़े शाहजादेनो
 पूछा कि गरपंखका ठिकाना कहाँ है और मैं
 क्यों कर वहां पहुंचूंगा जमीलबानी बोली कि
 हे मेरे प्यारे तू कुछ चिन्ता अपने मनमें मत
 कर मैं सब जगहका पता ठिकाना बतादेती हूँ
 यह कहकर सुलेमानो और सब धनुष और
 कटार तैमूसी शाहजादेको दिया और बोली

कि एक दिनके रास्ते पर यहाँसे एक जगह है
 उसको (सफाई जमनी) कहते हैं वहाँ तुम्हको
 एक कुण्ड मिलेगा तू वहीं उतरियो और वहाँ
 रातको अनेक पशु पक्षी आते हैं उन्हींमेंसे थोड़े
 से अहेर कर अपने पास रखछोड़ियो जब एक
 सिंह जिसका डील अस्सी हाथका है और वह
 सब बाघोंका कर्ता और उस जंगलका बादशाह
 है आवेगा तू निर्भय होकर साहस करके उसको
 निकट जाय प्रकाश करके एक कपड़ा जो मैं
 तुम्हको देती हूँ उससे उसका सब अङ्ग पीछे कर
 के जो अहेर तेरे पास होगा उसको आगे धरके
 हाथ बांधे खड़ा रहियो जब बाघ खाने लगे तू
 माथा हँटकिये छुरीसे उसको तिका तिका कर
 दीजियो जब वह खा चुके फिर उसी कपड़ेसे
 उसका मूँह हाथ परिष्कार कर दीजियो वह
 तुम्हपर बहुत प्रसन्न होगा और अनुग्रह करेगा
 इसी प्रकार बाघोंकी सेवाकरते ऊँचे चले जाइयो
 वहाँसे दोतीन दिन चलनेके पीछे फिर तुम्हको
 दो रास्ता मिलेगा साविधान बाधे रास्तामें

नजादूयो दाहना रास्ता पकड़ियो आगे ऐक गढ़
 जंगियोका कि नाम उसका खसामा है और
 चालीस हबशी जो सब उनमेंसे पांचर संहस्र
 हबशियोंका कर्त्ता है उसके द्वारकी रखवालीको
 रहते हैं वहांकी बादशाहका नाम तुखमताक है
 और बुह बड़ा अत्याचारी है परंतु इन सब
 बस्तुके प्रतापसे सब तेरी सेवा करेंगे वरं उसी
 की सहायतासे तू बाकाफ देशको पहुंचेगा पर
 साविधान हमारे कहनेसे उलटा कभी मत की
 जियो जब जमीलःबानोने सब समझाया और
 रास्ता बताया तब ऐक घोड़ा अच्छा उसके लिये
 घोड़सालसे मंगवाया शाहजादा उस घोड़े पर
 चढ़कर बाकाफको चला जमीलःबानो उसके
 बियोगमें व्याकुल होकर शाहजादेके पीछे चली
 जब शाहजादा तीन कोस जाचुका फिर कर क्या
 देखता है कि जमीलःबानो चली आती है निदान
 शाहजादा उस दिन वही उतरा और खाने
 पीनेकी सब सामग्री एकत्र कर रातभर मद्यपान
 और सुख चैनमें जमीलःबानोके साथ काटी

और सबरे उसको बहुतसी दारस देकर घरको
 भीजवा आप चलने लगा जमीलबानी उसके
 बियोगसे यहाँतक व्याकुल हुई कि पारा उसको
 व्याकुलताईको देखकर पानी पानी हुआ इधर
 जमीलबानी शाहजादेकी बियोगसे इस बुरी
 अवस्थाको पङ्ची और उधर शाहजादा
 जाते जाते सफ़हैजमीन पर जा पङ्चा वहाँ
 दो रास्ता मिला तब जमीलबानीका कहना
 शाहजादेकी स्मरण हुआ और वहीं उतरकर
 जाल फैलाये अहेर पर तक लगाये बैठाथा इत
 नेमें जब पहर रात बीती भांत भांतके पंखी वहाँ
 ऐकट्टे ऊँचे शाहजादेने उनमेंसे थोड़ेसेको अहेर
 कर अपने पास रखछोड़ा दोपहर रातके समय
 सब पक्षु पक्षी उस जंगलसे निकलगये और
 ऐक सिंह जिसका डील असी हाथकाथा आप
 ऊँचा शाहजादेने साहसकर निकट जाय झुक-
 कर प्रणाम किया तब सिंहभी शाहजादेकी नि-
 कट आया शाहजादेने उसी कपड़े से जो जमील-
 बानीने दियाथा मूँह हाथ उसका पोंछ दिया

और वह अहेर जो उसके पास था आगे धर
 कुरी से टुकरेकर सामने रखता गया सिंह खाने
 लगा और उसके सब साथी और बाघ चूँ
 और बैठे और शाहजादा हाथ बांधे खड़ा था
 जब खा चुका तब उसका भूठन और बाघोंने
 खालिया फिर उसका हाथ मुँह उसी कपड़े से
 परिष्कार कर दिया तब सिंहने शाहजादेको
 गोदमें लेकर बज्रतसी ठारसदी और कहा कि
 अब तुम यहाँ बैसट्के रहो और एक बाघको
 उसकी रखवालीके लिये वहीं छोड़कर आप
 जंगलकी और चला शाहजादेने समस्त रात
 अच्छी प्रकारसे वहीं काटी ॥

छिठी कहानी पहुँचना शाहजादेका
 जंगियोंके गढमें और लड़ाई करना जं
 गियोंसे और मारा जाना तुरन्तताक
 बादशाहका शाहजादेके हाथसे और
 उसकी लड़कीसे ब्याह करके जाना
 वाकाफको ॥

प्रात समय शाहजादा ईश्वरका ध्यानधर घोड़े

चढ़कर चला जब उस दोरास्तेके निकट पहुँचा
जमीलबानोके कहे प्रमाण दाहने रास्तेको
चला दोतीन दिन पीछे ऐक बड़ा गढ़ दिखाई
दिया और उसकी भीतपर तोपें चढ़ीं थीं और
लड़ाइके सब अस्त्र शस्त्र रखे थे चाहा कि वहांसे
लौटे परंतु फिर आना उचित न जानकर कहा
जो होनी हो सोहो निदान जाते जाते उस
गढ़के द्वारेतक जापहुँचा ऐसा उत्तमगढ़ देख
नेमें आया कि पृथ्वीके बादशाहोंने बिट्ठा खप्पुमें
भी नदेखा होगा उंचाईमें आकाशकी समान
और उसके निकट ऐक बड़ा वृक्षऊँच बांधिया शाह
जादा उसीकी नीचे घीड़ोंको बांधकर आप सु-
स्ताने लगा इतनेमें कई जंगी दिखाई दिये और
वे लोग शाहजादेको देखकर बहुत प्रसन्न हो
आपुसमें चरचा करने लगे जो आज अनेक दिन
पीछे ऐक मनुष्य ईहा आयाहे हमारे बादशाह
तुरुमताकको मनुष्यका मांस बहुत भला लगताहै
इसको पकड़कर उसके पास लेजावें यह विचार
कर दस बारह जंगी शाहजादेके निकट आकर

पकड़नेका उद्योग करने लगे शाहजादेने जंगि
 यांसे पूछा कि तुम मुझे किस लिये पकड़ते हो
 उन्होंने कहा कि तुम्हें अपने बादशाहके पास
 लेजावेंगे वृह जलुष्यके भांसको प्रसन्न होकर
 खाता है उसके पल्टेमें हम लोगोंको बहुतसा
 पुरस्कार देगा जब शाहजादेने जंगियांसे यह
 सुना और अपने बचनेकी आशा न देखी तब
 उसी समय अकबर सुलैमानी बसीटकर जंगि-
 योंको मारना आरम्भ किया और छिगनाचमें
 सबको मार गिराया तब यह बाली तुलसताक-
 की पड़'ची उसने चलमाक नाम एक जंगीको
 जो उसकी सेनाका कर्त्ता और बल पराक्रममें
 अति प्रबलथा शाहजादेके पकड़नेके लिये भेजा
 चलमाक चह' औरसे जंगियोंका सेना साथ
 लेकर भिरनीकी भांडके समान शाहजादेके
 माथेपर यमदूतके तुल्य आपहुं चा शाहजादा
 देखकर बहुत घबराया और चलमाकने शाहजा-
 देके निकट आकर कहा कि तेरा इतना पराक्रम
 जो तू यहां आवे और इतने जंगियोंको मारे

शाहजादेने जब चलमाकसे यह बात सुनी
 क्रोधकरके अकबर सुलैमानी खींचकर उसके
 निकट आया उस जंगीने तुरंत एक भाला धुमा-
 कर शाहजादे पर चलाया जिसकी धमकसे
 पृथ्वी कांपने लगी और बोहों हाथ बढ़ाकर
 शाहजादेको कांचमें दबालिया और चाहा
 कि उसे पकड़कर बादशाहके सोहों लेजावे
 शाहजादेने बोहों तैमूसी कटार निकाल चल
 माककी नाभीपर ऐसा मारा कि भंडारा खुल
 गया और गिरपड़ा जब यह बर्तौ तुरुमताककी
 पड़ची क्रोध कर बड़तसी सैना जंगीकी साथ
 लेकर आपड़चा और बड़तेरे जंगीका माथा
 कटा देखकर बड़त झूझलाया और चाहा कि
 शाहजादेको पकड़कर लेजावे शाहजादा जंगि-
 योंकी लड़ाईसे बहुत व्याकुल होगयाथा उस
 समय उसने कुछ बन नपडी कि दूतनेमें वुही
 सिंह जिसकी सेवाकीथी अनेक व्याघ्र साथ लिये
 अकस्मात् जंगलसे निकल आया और जंगि-
 योंकी ओर चला जंगीने जब बाघकी सैना देखी

तब मनमें अपने कहा कि यह मनुष्य नहीं है
 बरं कोई आपत्त सुझपर आई है यह कहकर
 चाहा कि गढ़ीके भीतर घुसे शाहजादेने साहस
 कर रस्तुमके समान जंगियोंके घेरेसे निकलकर
 उसी तलवारसे एक एक जंगियोंको मार उ-
 तारा यहांतक कि उनके रक्तसे उस परपट्टमें
 नदी बह गई इतनेमें शाहजादेकी दृष्ट तरुम
 ताक पर जो वह डील डौलका बड़ा लंबा
 चौड़ाया जापड़ी एक लोहेका भाला कीधपर
 लिये और कई पत्थर हाथमें गहे गढ़ीके भीतर
 जाताया बींही शाहजादेने दीड़कर पुकारा कि
 भला वे कहां जाता है खड़ा रह जब शाहजा-
 देकी ललकारी तरुमताकने सुनी कहा ओ
 मनुष्य अच्छे समय आया ऐकही बारमें तेरी
 हड्डियां पसलियां चकनाचूर कर डालता हूं
 यह कहकर एक भाला घूमाकर शाहजादे पर
 मारा शाहजादेने घोड़ेको ऐसा कबा दिया कि
 उसके भालेकी पवनभी उसको नलगी तरुम
 ताकने जाना कि यह मनुष्य इसकी धमकसे

मर गया होगा इस लिये उसकी खोजमें भूमि
 खोदने लगा और कहता था कि ओ मरुप्यका
 बच्चा कहां है और किस ध्यानमें है इतनेमें शाह-
 जादा दूसरी औरसे बोड़ेको कावा देकर उसके
 सामने आया लुखमताकने देखा कि यह तो
 जीता है पूछा कि तू इस चोटसे क्योंकर बचा
 पहाड़भी होता तो टुकरे टुकरे होजाता शाह-
 जादाबोला कि मुझे ईश्वरने बचाया यह सुनकर
 उसने चाहा कि फिर भाला उठावे और शाह-
 जादेपर मारे शाहजादेने साविकाश पाकर
 अकबर सुलेमानीको निकालकर उसपर ऐसा
 मारा कि एकही बेरमें ठिकाने लग गया वह
 सिंह शाहजादेकी यह साहस देखकर न्यून्य-
 बाद करने लगा शाहजादेने फिर उसी कपड़ेसे
 उसका मुंह हाथ पीछे दिया तब बाब शाहजादेकी
 साथ लेकर माढ़ीके भीतर गया वहां एक फूल
 वारी हरीभरी देखी निदान शाहजादा उस
 फूलवारीको देखकर अति प्रसन्न हुआ और
 लुखमताककी लड़कीकि लावण्यता जिसके रूप

को देखने और चाहनेवालोंके घाउ पर नीन छिड़कनेवाली थी दृष्ट पड़ी शाहजादेकी बाधके साथ देखकर डरी और बड़ी आव भगतसे सिंहासन पर बैठाया और खाने पीनेकी सब सागरी लाय उपस्थित की और शाहजादेसे कलजा सीखा और सुसलमान हुई फिर बोली कि शाहजादे मैं आजसे तेरो लौंडी हूँ जहाँ तू जावेगा वहाँ मैं तेरे साथ चलूँगी तब शाहजादेने कहा कि मुझे अभी एक काम कठिन करना है जब बाकाफ़्से फिरूँगा तब तुमको अपने देशमें साथ लेजाऊँगा मेरे फिर आनेतक तू अपने बापकी जगह पर बादशाही कर और एक बाध उसकी रखवालीके लिये छोड़ कर और एक अच्छा घोड़ा तुम्हाराके बाजिसालासे खोलकर और उसपर बैठकर वहाँसे बाकाफ़्का रास्ता लिया ।

सातवीं कहानी पञ्चना शाहजादेका
गरपंख पक्षीके ठिकाने पर और जारा
जाना एक बड़े पुराने अजगरका शाह-

जादेको हाथसे और बचाना गरपंखके
बच्चोको अजगरसे और गरपंखकी
सहायतासे वाकफ्देशमें पज्जचनेके
वृत्तान्तमें ॥

निदान दो तीन महीने चलते चलते एक
परपठ स्वर्ग आरामके समान दिखाई दिया
बरन बरनके फूल उसमें खिले ऊँचे हरियाला
हरियाला लहलहाया हुआ और लाला डहड
हाया हुआ कुमरीकी मीठी शब्दसे सरोस्तुतिके
लिये हिलताथा और बुल बुलकी चहचहसे
कोढ़िया फूलोंकी साथ लटकरहीथीं और (नहरे)
बहांकी अच्छी और उज्जल जल उनमेंसे चल-
ताथा शाहजादा ऐसी सुहानी जगहके देखनेसे
आश्चर्य करने लगा और एक उंचे वृक्षके नीचे
बैठा उस पेड़में भांत भांतके फूल फल लगेथे
और कुण्ड (संगमरमरका) अच्छा सुधरा बना
हुआ और पानी उसका एक औरसे आकर
दूसरी ओरको निकल जाताथा शाहजादेको देख
नेसे उसके जमीलबानीकी बात ध्यानमें आई

जाना जो गरपंख पल्लीका ठिकाना यही होगा
 तब घोड़ेकी चरार्इके लिये छोड़ दिया आप
 कुण्डमें उतर नहा धोकर खाने पीनेकी सा-
 मग्री जो साथयी खाई और उसी पेड़की छांहमें
 लेटा और रास्तेकी थकाईसे निश्चेत सो गया अक-
 स्मात् घोड़ा शाहजादिका हनहनाता और
 चिल्लाता हुआ शाहजादिके सिरहानेपर आया
 और टापने लगा उसकी शब्दसे शाहजादिकी
 आंख खुल गई देखा तो ऐक अजगर पहाड़के
 समान माथा उठाये हुवे और पेटकी भूमिपर
 मलता हुआ चला आता है बड़े पत्थर जो उस
 के नीचे आते हैं पिसकर चूरचार हो जाते हैं तब
 भय खाकर वुही सर धनुष जो उसके पासयी
 निकाल चुप लगाये घासमें बैठा जब अजगर
 फन उठाये पेड़के निकट आपहुंआ और चाहा
 कि उसपर जावे शाहजादिके चिह्नकरके ऐसा
 सर लगाया कि ऐकही सरसे कला उसका घा-
 इल होगया तब क्रोधकर अपने माथेकी भूमि
 पर पटकने लगा ऐक बड़ी पीछे मन उसके

दूँहसे निकला जिसकी जोतसे रात परपट उ
 जाला होगया और उसी समय शाहजादेको
 देखकर चाहा कि अपने सांसके साथ शाहजादे
 कोभी खींचले मगर शाहजादेने आपको उसकी
 सांसके सामनेसे अलग कर लिया और साहस
 करके एक सर उसकी कट्ठी पर मारा पर वुहभी
 ठोक नबैठा फिर तलवार निकाल ईश्वरका
 ध्यानकर एकही हाथमें मार गिराया शाह-
 जादा मारे बिपके विसुध होगया दो चार बड़ी
 पीछे सुधमें आकर अपना सारा शरीर रक्तमें
 लिपटा देखकर कुण्डमें उतरकर नहाया और
 बदन परिष्कारकर कुछ खाया और कुण्डकी
 सामने जाबैठा और देखा कि उसी पेड़पर गर-
 पंखका बासा है उसकी बच्चे घोंसलेसे माया नि-
 कालकर अजगरकी लड़ाई देख चुके थे पर भूख
 के मारे बिलबिला रहे थे शाहजादेने उस मांसको
 तिका तिका कर उस बच्चोंको खिलाया बच्चे
 मांस खाकर मग्न हो सो गये और शाहजादाभी
 थग गया था फिर सो गया इतनेमें जोड़ा गर-

पंखका जो बच्चोंके लिये चारा ढूंढने गयाथा
 आपलुं चा परन्तु बच्चोंकी शब्द नपाई गरपंखने
 सोचा कि जो यह सोचाहै यही हमारे बच्चोंको
 मारकर खागयाहै और इसी प्रकार सर्वदा
 हमको आकर सताताहै आज इसको मार डा-
 लना उचितहै यह विचारकर कई सहस्र मनका
 पत्थर पहाड़से उठालाया और चाहताथा कि
 शाहजादे पर छोड़दे इतनेमें गरपंखकी स्त्री
 बोली पहिले अपने घरमें बच्चोंको देखो पीछे
 इसको मारियो किसी निर्दोषीकी हत्या करनी
 भली नहीं अन्तको इसका प्रतिकार पाओगे
 यह बात गरपंखको भाई और अपने धांसलेमें
 गया देखा तो सब बच्चे सुखसे सोतहैं पर उसको
 जातेही जागउठे और अजगरकी लड़ाइका सब
 समाचार और मांस खानेका प्तान्त कह सु-
 नाया और कहा कि आप इसको कदाप नमा-
 रिये इसीने हमारा जी बचायाहै जब गरपंखने
 बच्चोंसे शाहजादेकी अरुग्रह सुनी उसकी
 साहसपर धन्यवाद करने लगा और अपने

मनमें कहा कि इसने हमारा बड़ा उपकार
 किया है हमको भी उचित है कि उसके पल्टे में
 उसके साथ भलाइ करे यह कहकर पेड़ से नीचे
 उतरकर शाहजादे की पास आया और अपने
 पंख से शाहजादे पर छाया किये बैठा रहा जब
 शाहजादा नींद से जागा तब उसने पूछा कि
 तुम पर कैसी क्या विपत्ति और कठिन पड़ी है
 जिसके लिये तू यहां तक आया परंतु तूने मेरा
 बड़ा उपकार किया है जो मेरे बच्चों को ऐसी
 शत्रु के हाथ से बचाया अब तेरा क्या अभिप्राय
 है कह जहां तक मुझसे हो सकेगा उद्योग
 करूंगा शाहजादे ने अपना सब समाचार उसे
 कहा तब गरपंख बोला कि शाहजादे तुमको
 चाहिये कि थोड़े दिन यहां रहो खाने पीने की
 सामग्री ऐकड़ा कर कर यहां से चलना पड़ेगा
 शाहजादे ने कहा जो कुछ हो हमसे कहो हम
 सब उपस्थित कर देंगे गरपंख बोला कि यहां
 (गोरखर) बहुत आते हैं तू उनमें से दो चार को
 अहर करके उनको मांस को भून भानकर और

उसको चमड़े की (मशक) बनाकर पानी से भर-
 कर साथ रख ले जब मैं अपने बांह पर तुम्हको
 बिठलाकर नदी पार होऊँगा तब मैं बहुत थक
 जाऊँगा उस समय वही मांस और पानी दो-
 जियो इसी प्रकार सात नहिया पार होकर
 बाकाफूमे पञ्चूंगा शाहजादने गरपंख की कहे
 प्रमाण सात गोरखर अहेर किये और कई
 मशक पानी से भरीं तब गरपंख से कहा उसने
 शाहजादेको अपने बांह पर बिठला लिया जब
 नदी पार उतरा तब वही मांस और जल उ-
 सकी दिया इसी प्रकार जब पार होकर दुखे में
 पञ्चता तब गरपंख ने शाहजादे से कहा कि
 तुमने हमारा ऐसा उपकार किया है कि जनम
 भर तक हम न भिसरेगे फिर कई पंख और एक
 मोती शाहजादे को दिया और कहा कि ले अब
 मैं जाता हूँ और जिस समय तुम्ह पर कोई
 गाढ़ आपड़ तब इसको अंग पर रखकर
 जलाइयो तब मैं अपनी सैना समेत तेरे पास
 आपञ्चूंगा यह कहकर गरपंख तो शाहजादे से

बिदा हो घरको चला ॥

आठवीं कहानी पड़चना शाहजादेका
वाकाफ देशमें और मिलना फरख
खानसे और उसीकी सहायतासे
भेंट होना समीवर शाहका और सुन्ना
सब समाचार गुलका समीवर शाहसे।

निदान शाहजादा वाकाफमें जा पड़चा
और ऐक बड़ा गढ़ दिखाई दिया तब शाह-
जादा उसकी भीतर जाकर नगरमें फिरने
चलने लगा और वहांकी सोभा और सजावट
देखकर बहुत प्रसन्न हुआ पर मिहर्अंगीजका
प्रश्न किससे पूछे इसी सोचमें रहताथा कि अक
स्मात् ऐक पुरुषसे जो उसका नाम फरखखान
था भेंट हुई शाहजादेने उसी बहुतसी लगा-
वट करके यहांतक भिन्नताईकी जो यह ऐक
बड़ी शाहजादेकी नदेखता तो व्याकुल होजाता
जिद न ऐक दिन शाहजादेने बातों में पूछा
ओ भिच (गुलका समीवर चिकर्द) यह सुन्धान
जो तुम जानतेही तो सुभासीकही वुह ईसवातकी

सुन्ने ही ओठों में पसीने पसीने होगया और
 नाक झोचताकर शाहजादे की ओर देखकर
 बोला जो तुम्हारे साथ मित्रताई नहीती तो मैं
 अभी तुम्हें मार डालता शाहजादा इस बात के
 सुन्ने से बहुत डरा और जाना कि यह भेद इस
 पर प्रकाश है तब शाहजादे ने कहा कि हे मित्र
 मेरे मारने से तुम्हें कुछ प्राप्त हो तो बिलम्ब नकर
 परंतु पहले मुझे वह भेद बतला कि जो मैं अब
 जान् नरहे उसने शाहजादे से कहा कि भला
 किसी समय कहलगा निदान ऐकदिन शाहजादे
 से कहा कि ओ शाहजादे सनौबर इस देश का
 बादशाह है और गुल बादशाह बेगम का नाम
 है इतना ही मैं जान्ता हूँ (गुलनास नौबर चि-
 कर्द) मैं कुछ नहीं जान्ता और बादशाह ने
 देश के लोगों को यह आज्ञा दी है कि जो कोई
 गुल का नाम और हमारा हत्तान्त पंखे तुल
 उसको मार डालो मैंने मित्रताई के हेत से तुम्हें
 कुछ नहीं कहा और बादशाह भिन्न इस भेद को
 कोई नहीं जान्ता अब मैं तुम्हें बादशाह के

पास लेजाताहूँ तब यह भेद तुमपर प्रकाश
 होगा वह पुरुष बादशाहके निकट मान्यमानथा
 एक दिन शाहजादेकी अपने साथ लेगया और
 निवेदन किया कि यह बिदेशी अनेक दूरसे आ-
 पका सुख्यात सुनकर आशा लगाये यहाँ आया
 है बादशाहने उसका रंग रूप देखकर आश्चा-
 र्य की कि नित हमारे पास आया जाया करे तब
 शाहजादेने वही सुक्ता जो गरपंगवने दियाथा
 बादशाहको दिया बादशाह जैसे अनमोल
 मोतीके पानेसे बहृत प्रसन्न हुआ क्योंकि ऐसा
 मोती बादशाहने कभी नहीं देखाथा बरं बड़े
 बड़े बादशाहोंके यहाँ तथा शाहजादेसे पूछने
 लगा कि यह मोती तू कहाँसे लायाहै उस
 समय शाहजादेने निवेदन किया कि मैं व्यापारी
 हूँ' जैसे जैसे अनेक मोती मैं अपने देशसे लेकर
 आपके पास आनेकी इच्छा रखताथा रास्तेमें
 एक जंगीयोंका गढ़ मिला उन लोगोंने मेरा सब
 धन सम्पत्त लूट लिया और यहाँतक अत्याचार
 किया कि पानीपीनेकी एक जल पात्रभी न छोड़ा

परंतु यह मोती मेरे छंदपर बंधाया इसलिये मेरे पास रह गया तब सनौबर शाह शाहजादे पर और भी अधिक दया करने लगा और शाहजादे को अपना मित्र बनाया यहाँ तक जो कदाचित एक दिन न देखता तो व्याकुल हो जाता निदान एक दिवस बादशाहने शाहजादे से पूछा कि हे मित्र जो तुम्हारी सेवा हो सी मुझसे कहो मैं उसका उद्योग कर दूंगा तब शाहजादेने अपने मनमें विचारा कि ऐसा समय फिर न मिलेगा जो हीनी होसीही अब निधड़क पूछा चाहिये यह बात अपने मनमें ठानकर निवेदन की कि मैं ऐकान्तमें कुछ पूछा चाहता हूँ सनौबरशाह उसी समय वहाँसे उठकर ऐकान्तमें गये और शाहजादे से कहा कि अब कहो तब शाहजादा बोला जो मुझे जीव दान दीजिये तो निवेदन करूँ बादशाहने कहा बहुत अच्छा तब शाहजादा बोला कि मैंने किसीसे सुना है कि (गुलबासनौबर चिकर्द) उसी दिनसे इस भेदकी जानकी बड़ी बड़ी

बिरतें उठाता हुआ यहाँतक आपहुँचा। और
 आपके दरसन पाये परन्तु अब हमारी यही
 आशा और आज्ञा है कि इस विदेशी पर दया
 कर उस भेदको मुझसे कहिये सनौबर बादशाह
 यह बात सुनतेही आगका बगोला बन गया
 और बोला अभी तेरा भाषा धड़से अलग कर
 डालता पर क्या कहूँ पहले जीवदान दे चुका हूँ
 अब तुझकोभी उचित है कि इस बातका पीछा
 न करे और छोड़ दे किस लिये कुछ भेद कहनेके
 योग नहीं शाहजादेने निवेदनकी जो हमारी
 इस अवस्थापर सुदृष्ट करके कहिये तो बड़त
 आश्चा है और आप पहलेही आज्ञा दे चुके हैं कि
 तेरा जो अभिप्राय हो सो कह यही मेरा अभि
 प्राय था जो मैंने निवेदन किया इसको भिन्न
 और कोई अभिप्राय नहीं रखता शाहजादेकी
 बात चीतसे बादशाह बहुत बेबस हो गया और
 चुप हो रहा इतनेमें एक दिन बादशाहने
 नत्तकी सभा सजाई और वहाँ गाने बजानेका
 चरचा फैला और मद्यपानका रीला मचा

मदके ढालनेवाले जिनके कपोल फूलके समान थे
 बिलौरके पात्रमें मद भरकर पिलाने लगे और
 अच्छे अच्छे गवईये जिनके कपोल लालके
 समान थे नई नई ताने सुनाने लगे बादशाह
 मद्यपान करनेसे बहुत मग्न हुआ तब शाह-
 जाहने प्रणाम किया और पात्र लेकर पीने लगा
 निदान आपुसमें प्रसन्न होकर पीने लगे जब
 पीते पीते कुछगये तब शाहजाहने निर्खुज्ज
 होकर एक सितार उठा लिया और तारोंको
 मिला कई गते' औसी बजाई कि सभाके सब
 लोग मोहित होगये और यह गजल इस प्रकार
 से गाई कि सुननेवालोंको मूर्छागत आई और
 बेचेत होगया ॥

॥ गजल ॥

गरकिसी दबसे कोई सुभको हंसा देता है ।
 गमे फिकत बुहिं कुछ याद दिला देता है ॥
 रातटुक नोंदसी आती है तो फिर उस्ता खयाल
 आंख लगने नहीं पाती कि जगा देता है ॥

लखते दिलसे मेरे यों अश्रुकरवांमें है बहार ।

बगै गुल ज्यों कोई दरियामें बहा देता है ॥

लज्जते ददौगमें दूश्क है ऐसा अगर ।

रोदूये उसमें तो रोनाभी मजा देता है ॥

मरजे दूश्कसे यह हाल है मेरा कि तबीब ।

अवतशफ्फीके लिये सुभको दवा देता है ॥

और सेहतकी जो पूछो तो किस है उम्मेद ।

अैसे बिमारको अल्लाही शफा देता है ॥

गुलजी हंसता है तो गुज्जेका चटकना जुरअत

कूचे रहलत वही गुलशनमें बजा देता है ॥

तब बादशाह, शाहजादेकी पास बुलाकर बोले

कि तेरे गाने बजानेसे हम बहत प्रसन्न ऊँचे

अब तुम्हको जो कुछ चाहिये सो मांग मैं अभी

देता हूँ तब शाहजादेने कहा बुही चाहता हूँ

जो मैंने आपसे मांगा है और बुही मेरा अभि

प्राय है तब बादशाह बोले कि पहले तू सुभसे

यह प्रतिज्ञाकर कि जब यह वृत्तान्त सब सुन

चुके तो मैं तेरा माथा काट डालूँ शाहजादा

बोला बहत अच्छा मैं इसमें भी नहीं हटता ॥

नबी कहानी ब्याख्यान करना सनौबर
शाहका गुलका समाचार और दिखाना
गुल और जंगीकी बुरी अबस्थाका
शाहजादेको ॥

एक दिन सनौबर शाहने शाहजादेसे कहा
कि ओ धारो क्यों अपना जी दया गंवाता है
अबभी हमारी बात मान और हटको छोड़
पर शाहजादेने किसी दबसे नमाना कहनेवाला
इस कहानीको यों कहता है सनौबरशाहने
अपने दासोंको आज्ञा की कि वुह कुत्ता जिसके
गलेमें जड़ाऊ (तौक) पड़ा है लेआउ कई
डोरिये जो सर्वदा उस कुत्तेकी सेवा टहलमें
रहतेथे बड़ी टीपटापसे लेआये गही (जरबफ्त)
को बिछाई गई फिर कई लौडियांभी आय उप
स्थित हुई और एक स्त्री कोमल गात हाथ पांव
बंधे लोहेके सीकड़ सेजकड़ी हुई जो बारह
जंगियोंकी रखवालीमेंथी आई और एक थाल
में एक जंगीका माथा धराया वुहभी दास लोग
लेआये और उस स्त्रीके सामने रखा फिर बाद-

शाहने खाना मझा रसोईये लोग भांत भांतके
 खाने पीनेकी सामग्री लेआये और कुत्तेकी आगे
 रखा जब वह कुत्ता खा पीकर मग्न हुआ तब
 उसका भूटा उस सुन्दरीके आगे ला रखा जब
 वह कई आस खा चुकी तब बादशाहने उठकर
 एक लकड़ी जंगीके माथे पर ऐसी मारी कि
 कईटोप रक्त उसके माथेसे टपक पड़े सो दासोने
 उस अबलाको चटादिये उसके पीछे बादशाहने
 कहा कि तूने सब देखा अब अपनी प्रतिज्ञाकी
 पूराकर तब शाहजादा बोला कि आपकी कृपासे
 यह सब चमत्कार देखनेमें तो आया परन्तु
 अभी तक मेरे समझमें कुछ नहीं आया तब
 बादशाह दत्तान्त कहने लगे इसमें वह स्त्री
 जिसके हाथ पैर बंधे थे रोउठी पर जो आंसू
 उसके आंखोंसे टपकताथा सोति हो जाताथा
 और लाडियां बादशाहको ला देतीथीं छिप
 एक पीछे हंस पड़ी हंसनेके साथी कई एक
 फूल भड़ पड़े वृहभी बादशाहको लादिया
 बादशाहने कहा कि इसको भली जगह रखदा

फिर शाहजादेको कहा कि अब तेरा मुण्ड काट
 शाहजादा बोला कि पहले मुझे सब वृत्तान्त
 कहिये तब जो आपकी इच्छा हो सी कीजिये
 बादशाहने कहा कि हे विदेशी यह स्त्री जो
 बंधी है इसीका नाम गुल है और मेरा नाम सनौ
 वर मैं इस देशका बादशाह हूँ एक दिन मैं
 आखेटको निकला परपटमें मुझको बल्लत घास
 लगी पानीकी खोजमें फिरता रहा निदान एक
 अन्धेरा कुँवा दिखाई दिया ज्यों त्यों वहाँ प-
 ल्लंछा पर डोल रही कहीं जो पानी भरूँ टोपी
 की डालची और पगड़ीकी डोरी बनाकर
 पानीकी आशासे कुँबेमें लटकाई अचम्बेकी
 बात है कि डोर कुँबेमें अटकागई बल्लतेरा उद्योग
 किया पर वह नखिचो तब मैंने सुकारा कि
 जिसने इस कुप्रमों अपना स्थान किया है मुझ
 बटोहीपर दयाकरके इस डोलको छोड़ दे जो
 मारे घासके जो जाता है और कलेजा मूँहकी
 चला आता है तब कुबेसे यह शब्द करे कानमें
 पड़ी कि हम अनेक दिनसे इस कुबेमें पड़े मर

तेहै ईश्वरकेवास्ते हमको यहाँसे निकाल इसमें
 तुम्हको बड़ा पुन्य होगा तब मैंने लेश उठाकर
 उनको वहाँसे निकाला देखा तो दो स्त्रीयां बूढ़ी
 और अन्धीहैं शरीर उनका धनुषकी समान
 झुका हुआहै और हाथ पांव मूखकर सरके
 समान होगयेहैं और सब शरीर मारे दुबलापिके
 छनगयाहै आंखें धस गईहैं और दांत झड़
 गयेहैं माथा हिल रहाहै पग उठाते डगमगाती
 हैं साथिके बाल धुनी ऊई छईके समान खेत
 सारे अंगमें भुरियां पड़ी हुई मेरे समान खड़ी
 ऊई यह अवस्था देखकर मैंने पूछा कि इस
 कुयेमें तुम्हारे रहनेका क्या हितहै उन स्त्रियोंने
 कहा कि हे बटोही यहाँके बादशाहने क्रोधकरके
 हमको अन्धा बनाकर इस कुयेमें डलवा दियाथा
 अब ईश्वरने तुम्हको यहाँ भेजा और तूने हम
 लोगोंको निकाला अब हम ऐक औषधी बत
 लावे तू बुह लाकर हमारी आंखोंमें लगावे
 तो तूत हमारी आंखोंमें जोत आवे इसी तू बड़ा
 पुन्य जीतेगा और उसके पलटमें हमभी तेरी

सेवा टहल करेंगे तब मैंने पूछा कि कहीं तुम्हारी
 आंखों की औषधी क्या है उन्होंने कहा कि
 यहाँसे थोड़ी दूरपर एक नदी है उसके तटपर
 एक गाय चराईके लिये आती है जो तू गोबर
 उसका लाकर हमारी आंखोंमें लगावे तो अभी
 हमारी आंखें अच्छी होजावें वह गाय जिस
 समय आवेगी तू आपकी उसकी दृष्टिसे औभल
 रखियो क्यों कि तुम्हें देख पावेगी तो मार डाले
 गो है बिदेशी मैं यह बात उन अनिष्टियोंसे सुन
 कर नदीकी ओर चला और वहाँ जापहुँचा
 देखा कि एक गाय रूपके पहाड़के समान शरीर
 और बड़ी बलवान कि बाधका पिता जिसके
 देखनेसे पानी होजाय नदीसे निकल आई और
 तटपर चरने लगी तब मैंने भट आपकी उसकी
 दृष्टिसे छिपाया जब वह गाय चराई करके नदीके
 भीतर गई उस समय मैं उसका गोबर लेकर
 चला और उसी कुँबेर आया ज्योंही उन
 दोनोंकी आंखोंमें लगाया वहीँ उनके आंखोंमें
 जोत आई और दूधर उधर देखने लगी और

बोली कि हे बेटाही यहां परियोंके बादशाहका
 स्थान है और उसकी ऐक बेटी बहुत सुन्दर कि
 जिसके मुखड़ेके सामने सूरज व्याकुल होजाता
 है. हाट उसके ऐसे लाल औ कोमल जैसे
 फूलकी पंखड़ी ऐक चूमा उसका सहस्र रोग
 रोग और व्याधकी औषधी जदमाती अंखडिया
 उसकी देखकर ऋग लज्जा पावे और उसकी
 कपोलोंकी कोमलताई और लालीसे फूलकी
 सोभा मन्द पड़जावे जो हम तुम्हको उस जगह
 पड़ंचावे तो तू उसके देखतेही मोहित हो
 जावेगा और उसके मा बापभी उसपर मोहित
 हो रहेहैं सर्वदा छातोसे लगाये रहतेहैं और
 नित प्रात समय उठकर उठकर उसके रूपका
 दरशन करतेहैं तब और काम काजमें लगतेहैं
 हम तुम्हको उसके पास लेजातेहैं जी खोलके
 उसके साथ सुख चैन कीजियो जो उसके मा
 बाप यह बार्ता पावे तो तुम्हको आगमें डालने
 आज्ञा देंगे उस समय तू कहियो कि इस दो-
 षीके लिये जो प्रतिकार अपने विचार किया है

सो यथार्थ है परंतु मेरी यह निवेदन है कि
 थोड़ासा तेल हमारे बदनमें मलवा दीजिये तब
 तो आगमें जलनेका लोभ मुझपर बल्लत जाना
 नहीं जायगा और झट् पट् जल भुनकर खाइ
 होजाऊंगा जब तेल मलनेकी आछा देंगे तब
 हम उस समय ऐक ऐसा तेल तेरे बदनमें मल
 देंगे जो सहस्रवर्ष तू आगमें पड़ा रहे तौभी ऐक
 काला नपड़े निदान जब उन दोनोंने मुझसे यह
 बात कही और मुझको वहां ले गईं मैंने जाना
 कि स्वर्ग मण्डली यही है और वहां ऐक चन्द्र
 बदन सुन्दरी जिसके रूपकी चमकसे सारा घर
 उजाला हो रहया ऐक सिंहासन पर बड़ी टीप
 टाप और नखरे तिह्नेसे सीती है उसके कपो-
 लोंकी दमकसे संसारका उजाला करने हारा
 सूरजभी लज्जितथा ॥

दसवीं कहानी मिलना सनौबरशाहका
 गुलके साथ उन दोनों बुढ़ियाओंकी
 सहायतासे और आगमें पड़ना सनौबर
 शाहका और व्याह होना उसका गुलसे।

मैं दूर से उसके रूप को देखते ही बेसुध और
 बेचेत होगया वही एक पीछे जरा सुध में आया
 और अपने तर्क संभाला औ उसके पास जा
 खड़ा हुआ जब वह नीन्द से जागी और सुभ
 पर उसकी दृष्ट पड़ी वहाँ उसके मिलन के
 बाज्जा का सर मेरे कलेजे के पार होगया और
 छट पटाने लगा और वह कामनी त्वीरी चढ़ा
 कर भिड़क उठी और क्रोध कर बोली कि अरे
 तू कहाँ से आया और तुमकी यहाँ किसने पङ्क
 चाया तू अपने जीका भय नहीं करता ऊपर
 मन से तो ऐसी ऐसी धमककियाँ देती थी पर
 मन ही मन वह भी सुभ पर मोहित होगई थी
 तब मैंने कहा कि हे मेरे अन्तःकरण की सुख देने
 वाली मैं तेरे मिलन के लिये यहाँ तक आया हूँ
 और जीका कदापी भय नहीं रखता निदान
 ऐसी ऐसी लगावट और बनावट करता रहा
 जब उसने समझा कि कोई प्रकार से यह नहीं
 डरता तब बड़े आदर भाव से मेरा हाथ पक
 ड़के बिछौने पर ले गई और सुभे बिठलाकर

गलेसे लिपट गई, उस समय मैंने अपने बदनकी
 सभाई बल्लमे नपाई और उस चञ्चलने भाट
 अङ्गुरी मद मङ्गवाकर पीना आरम्भ किया मैंने भी
 उस स्थानको ऐकान्त पाया और इच्छा उसकी
 अधिक देखी तब उसकी मिलनकी मदसे संसा-
 रका सुख भोग करने लगा इसी प्रकार कई
 दिनतक चैनसे काटी परंतु उसकी माँ वापका
 खटका मनमें रहता था ऐसा नहीं कि यह गुप्त
 भेद किसीपर खुले और वियोगकी घड़ी आ
 जावे और दोनों मारे जावें इस शोकसे मनही
 मन कुदती थी ज्यों त्यों दोमहोनेतक इस
 बातकी छिपागद् ॥ छिपायेसे अगनि छिपेहि
 कहो ॥ निदान एक दिन उसकी बापने जो परि-
 योंका बादशाह था लड़कीके रूपको देखकर
 सोचकरने लगा और तब उसकी माँको बुलवा-
 कर कहा कि इस लड़कीके वृत्तान्तका सन्धान
 जाना चाहिये कि किस लिये इसका रूप बिगड़
 गया है तब उसकी माँ लड़कीके पास आकर
 पूछने लगी कि हे मेरे आँखोंकी पुत्ली किस

हेतसे तेरो यह अवस्था भद्र सच बता नहीं तो
 अभी तुझे मार डालूंगी जितने बुरा पुछती थी
 बुरा उसका उत्तर कुछ न देती थी सोस नीचाकर
 के चुप लगा रहती तब उसको मा बापने जाना
 कि निसन्देह किसीके प्रीतका सर इसको कलेजे
 पर लगा है तब दंढ खोजकर मुझको वहांसे
 निकाला और देवोंको आज्ञा दी कि इसको ले
 जाकर आगमें डाल दो कि जल धुनकर राख
 हो जावे भट देवाने मेरा हाथ पकड़कर बाहर
 निकाला औ बड़तसी लकड़ी ऐकेहाकर ऐसी
 आग भड़काई कि नरककी आगभी उसको
 सामने बुरी हुई थी चाहा कि मुझको उस आग
 में डाल दे उस समय मैंने पुकार कर कहा कि
 हे बादशाह अपने मुझ दोषों और पापोंको
 लिये जो प्रतिकार बिचार किया है सो ठीक और
 यथार्थ है परन्तु थोड़ा सा तेल मेरे बदनमें मलवा
 कर आगमें डाल दीजिये तो मैं भट जल जाऊँ
 और मुझको कुछ लेश नहोवे तब बादशाहने
 उसकी निवेदन सुनी और तेल जलनेकी आज्ञा

दो बोहो उन्ही दोनों बुढ़ियाओंने थोड़ासा
 तेल ईश्वर जाने काहेकाथा मेरे बदनमें मल
 दिया कि सात दिनतक आगमें पड़ारहा और
 एक बालपरभी आंच नआई जो देव मेरी रख
 वालीके लियेउन्हीने जाना कि यह जलवार
 राख होगया होगा तब इस बातको बादशाहसे
 कहा बादशाहने आज्ञादी कि उस राखको
 उठाकर दूर कहीं फेंकदी अब वह लोग उठाने
 गये तब सुभे जीता पाया बहुत बबराये और
 आश्चर्य करने लगे और विचार किया कि यह
 मनुष्य नहीं कोई अछ जीवहै और यह लड़की
 इसीके कपालमें बदीहै तब सब देवे और परि
 याने अपने बादशाहको बहुत समझाया कि
 इसका विवाह इसीके साथ करना उचित है
 बादशाह उनके समझानेसे सनसत हुआ नि-
 दान एक अच्छी महर्त्ता और शुभलग्न ठहरा
 कर ब्याहके उद्योगकी आज्ञादी थोड़े दिनमें
 भटपट सब ठीक ठाक होगया और बड़ी धूम
 धामसे ब्याहकी सभा सजाई गई तब सुभको

पास बुलाकर जातपात पूछने लगे मैंने कहा कि
 मैं बाकाफ़ देशका बादशाह हूँ बहुत दिनोंसे
 तुम्हारी लड़कीकी प्रीतका सर मेरे कलेजेपर
 लगा है इस लिये इतनी विपत्तें उठाता हूँ
 यहाँ तक आपसँचा हूँ परियोंका बादशाह सुन
 कर बहुत प्रसन्न हुआ और उस सुन्दरी चन्द्र
 बदन मृगनयनकी साथ मेरा ब्याह कर दिया
 थोड़े दिनों बहों रहकर सुख चैन करने लगा
 फिर अपने देशमें आनेकी इच्छाकी और बाद-
 शाहसे विदाई चाही बादशाहने बहुतसा दान
 दहेज धन सम्पत्त सुक्ता मणि इत्यादि साथ देकर
 लड़की समेत विदा किया परियाँ हम दोनोंकी
 लेकर पवन पर उड़ीं ऐकहीं आनमें अपने
 देशको आपसँचा है विदेशी व्यापारी वृह ल-
 डकी जिसका नाम गुलथा यही है जो अब
 लोहेके सीकके सीकड़ोंसे जकड़ी बंधी है ले अब
 मैंने तुम्हसे सब वृत्तान्त कह सुनाया अब मेरे
 सामने आ जो तेरा माथा धड़से अलग करूँ तब
 शाहजादेने कहा कि हे बादशाह अबतक मेरे

समझमें भले प्रकारसे नहीं आया क्यों कि ऐसी कौनसी बुराई गुलने आपसे की थी जिसके लिये उसके पैरोंमें बेड़ियां डाल रखी हैं और इतना क्षोभ देते हो ॥

ग्यारहवीं कहानी कहनी सनौबरशा-
हका गुलके दृष्टान्तको और उसके
प्रतिकार देनेका समाचार और अल
मासखबर्खशकी हाथमें आना मिहिर
अंगेजका ॥

तब सनौबरशाह फिर कहने लगा कि हे
विदेशी कान लगाकर गुलके दुष्टताईके दृष्टान्त
को सुन ऐकरात ऐसा संयोग हुआ कि मैं शयन
स्थानमें सोता था और गुलभी मेरे पास लिपटी
हुई सोती थी अकस्मात् मेरी नोंद उचट गई
और आंखें खुल गई क्या देखता हूँ कि गुलके
हाथ पांव पानीसे भी अधिक ठण्ड हैं मेरे तई
यह चिन्ता भई कि किसी रोग व्याधके हेतु से
ऐसा भया है तब मैंने पूछा कि हे धारी तेरा
बदन ऐसा ठण्डा क्यों है तब बोली कि मैं बहिर

भूमको गईथो हाथ पाव धोयेहैं इसीवास्ते ठण्ड
 होगयेहैं मै'ने उसका कहना सच जाना कई
 दिनों पीछे फिर असाही देखा तब सुभे सन्देह
 हुआ और खटका मनमे' पैठा कि यह निसन्देह
 रातको कहीं जातीहै पर यह भेद मै'ने अन्तः
 कारणके उब्बेमे' बन्द रखा और जीभके फाटक
 पर चुप की कुंजी लगाई इस लिये कि जो यह
 बात मिथ्या हो तो निरर्थक लज्जित होना प-
 डेगा और सबके सींही हंसी होगी ऐकदिन
 मै' अपने बाजिमालामे' गया देखा तो सब घोड़े
 मेरे बज्जत दुबले होगयेहैं किसीकी तो पीठ
 लगगईहै और कोई तो हिलनेही नहीं सक्ता
 तब घोड़पालकीको बुलाकर बहुतसा और
 बज्जतसा धमकाया और बहुतीको प्रति-
 कारदी तब उससेमे' ऐकने जीके भयसे निवेदन
 किया जो बादशाह जीव दानदे' तो हम इस
 समाचारको कहे' बादशाहने जीव दान दिया
 तब वह बोला कि नित रातके समय बेगम
 साहब अच्छे सुथरे कपड़े और आभूषण पहन

कर निकलती हैं और जिस दिन जो घोड़ा
 उनका जो चाहता है घोड़साल से खोलकर फिर
 नेको जाती हैं पिछले पहर घोड़े को यहाँ छोड़कर
 घर में जाती हैं हे विदेशी जब यह वृत्तान्त उससे
 सुना तब उसको आश्चा दी कि आज एक घोड़ा
 और भी सजा रखियो इसी सोच में था कि सन्धा
 ऊई खाना खाकर बिछौने पर जा लेटा यह भी
 मेरे पास छाती से लगाकर सोरही और बोली
 कि आज नीन्द मेरी आंखों में छाई है आओ
 तुम भी सोरहो मैं उसकी बातें सुनकर समझा
 गया और झुटी सोती की नाहीं सांस लेने और
 खुराटे मारने लगा जब उस कपटी ने जाना कि
 यह मुझा सो गया तब बिछौने से उठी और
 दान्तों में मंजन और आंखों में काजल लगाकर
 सुगन्ध की बासी अङ्गिया चढ़ा जड़ज गहना
 पहन सजसजाके बड़ी टीपटापसे मदमातियों की
 तरह चली मैं भी वोही दबे पांव उसके पीछे
 लग चला जब घोड़साल में आई और घोड़े पर
 चढ़कर पवन ऊई मैंने सोचा मैं भी घोड़े पर

उसकी पीछे चलूँ तो आइट गुलके कानोंमें
 पड़ेगी फिर कुछ वन नपड़ेगा तब कपड़ा चढ़ा
 कर धीरे धीरे पैदल चलने लगा ज्यों त्यों धोड़े
 की पीछे पीछे गिरता पड़ता चला आताथा नि-
 दान गुल ऐक परपटमें जापड़ंची और यह
 जंगी जो तेरे सम्मुख खड़े हैं उसी जगह धर
 वनाकर रहतेथे जब यह उनके निकट गई जंगि
 योंने उसी समय उसे धरसे निकाल दिया कीड़े
 लेकर निकले और इसी दुराचारी गुलको यह
 मारमारी कि हड्डियां चूर होगईं हे विदेशी
 मैं दूरसे यह आश्चर्य चमत्कार देखकर समझा
 कि गुल मर गई होगा क्यों कि मैंने उसकी
 कभी फूलसेभी नहीं माराथा जो यह जंगियोंके
 प्रीतके तलवारसे धाईल होरहीथी इसने हाथ
 भी नमारी वरं उनके पैर चूमने लगी और
 बिनती करने तब जंगियोंने पूछा कि आज
 बिलम्बा होनेका कारण क्या है हाथ बांधकर बोली
 आज मुआ बादशाह ईश्वर उसको नाशकरे वहत
 बिर लग जागताथा इस लिये आनेसे बिलम्बा

ऊआ नहीं तो अबतक कबकी आई होती और
 तुम्हारे देखनेसे अपने मनकी सन्तोष किया
 होता अब मेरी यह आशा है कि जमा कीजिये
 हे विदेशी मैंने जब यह अपने आँखों देखा और
 बहुत आश्चर्य कर मनमें कहने लगा कि मैंने
 तो कभी गुलकी फूलसेभी नहीं माराथा आज
 किस प्रकार ऐसी चोटें और मार जंगियोंके
 हाथकी इसने सही निदान जंगी गुलका हाथ
 पकड़कर धरमें लेगये और इसके साथ सुखचैन
 करने लगे यह देखतेही मेरा कलेजा फुटने
 लगा और आँखोंसे आगकी चिनगारियाँ निक-
 लने लगीं व्याकुल होकर उस निर्लेज्ज [सभामें]
 चला गया जंगियोंने देखतेही भिरनीकी भूँडकी
 तरह सभी चहुँ ओरसे घेर लिया जो मैं अति
 बलवान और पुष्ट था इस लिये कुछ न कर
 सके जब जंगियोंने देखा कि इसमें कोई प्रकार
 करके नहीं सकेंगे तब अपने जी ले ले भागने
 लगे यह जंगी जिसका तू हाथ पाँव बंधा देख
 ता है मेरे हाथों पकड़ा गया मैं चाहता था कि

इसकी हाथ पैर बांधलूं कि इतनेमें यह जान
 दुष्टचारी गुल जो वहीं खड़ीथो पीछेसे दौड़-
 कर आई और मुझे, जैसा धक्का दिया कि मैं
 भूमिपर गिरपड़ा उस समय यह जंगी मेरे
 छाती पर चढ़ बैठा और इस कठोरने भाट एक
 कठार निकालकर मेरे मारनेके लिये उस जङ्गीके
 हाथमें दिया उस समयमें मैंने अपने जीकी
 आश त्याग करके ईश्वरका ध्यान करने लगा
 ज्यों जंगीने चाहा कि कठार मेरे गलेपर चलावे
 इतनेमें इसी कुत्तेने जिसको तू इस आदरसे
 बैठा देखताहै पीछेसे लपककर उस जंगीको
 अपने नखसे घादलकिया और टटुआ पकड़
 लिया तब मैंने अपना दाँवघात देखकर उसकी
 मुश्कें चढ़ाई और और गुलकी उसकी साथ
 पकड़कर घरमें लाया चार जंगी और जो मेरे
 डरसे भागेथे उनमेंसेभी तीनको पकड़वाया
 और एक जंगी भागकर बाहशाह कौमूसकी
 लड़की जो मिहरअंगेज नाम रखतीहै उसकी
 सिंहासनकी नीचे छिप रहीहै हे विदेशी अब

सब व्योपारी अब सब व्योरा गुलका तुम्हको
 कह सुनाया तूभी अपनी प्रतिज्ञाको पूराकर
 तब शाहजादा बोला कि जो मैंने आपसे प्रति
 ज्ञाकी है उससे मैं नहीं फिरता परंतु अब तक
 मुझे सन्देह है कि वृह जंगी भागकर मिह्र
 अंगेजके पास क्यों गया है और उसको मिह्र
 अंगेजने किसलिये छिपा रखा है पहले मुझे यह
 कहिये तब आपकी जो इच्छा हो सी कीजिये
 सनौबर शाह यह व्योरा कुछ नहीं जानता था
 इसलिये उसका उत्तर न दे सका और बोला कि
 हे विदेशी धन्यवाद है तुम्हको कि तूने किस ढंगसे
 अपना जी बचाया ले अब मैंने लम्बाकी निदान
 शाहजादा ऐसीर बिपते भेलकर गुल और सनौ
 बरका सब समाचार सुन और अपना जी बचा
 कर थोड़े दिन बाद शाह सनौबरके पास रहा
 फिर अपने देश जानेकी इच्छाकी और एक
 दिन नदीके तीर जाकर नहाया और गरपंखकी
 पंख जो उसके पास था आगमें जलाया तब
 वृही गरपंख आय उपस्थित हुआ शाहजादने

कई पशु अहेरकर खानेपीनेकी सामग्री सब ठीक ठाककी और उस गरपंखकी पीठपर बैठ सातों नहियां पार ही अगली रीतसे गरपंखकी बासितक आय पङ्कचा उसकी कहनेसे छोड़े दिन वहाँ रहकर बिदा हो जंगियोंके गढ़में आया और उसकी लड़कीको सब धन सम्पत्त सहित लेकर चला फिर उस परपटमें जहाँ बाघ मिला था आपङ्कचा अगली रीत प्रमाण उसी भी मिल जुलकर बिदा हुआ ॥

बारहवीं कहानी पङ्कचना शाहजादेका जमील:बानोकी पास और उसको साथ लेकर लतीफ:बानोकी पास जाना उसके प्रतिकार देनेको और मिहरअंगेजके प्रश्नके उत्तर देनेका वृत्तान्तमें ॥

इस कहानीका कहनेवाला यों कहताहै कि शाहजादा जाते जाते जमील:बानोकी घरतक आपङ्कचा वृह सुन्तेही लेनेको निकलो और बड़ी आदर भावसे शाहजादेको साथ लेकर फुल बारीमें गई और खाने पीनेकी बहुतसी यत्नकी

शाहजादेने अपने कहे प्रमग उस विवाह
 किया और कुछ दिनों वहाँ सुख चैनसे काटा
 थोड़े दिनों पीछे जमीलबानोकी साथ लेकर
 लतीफबानोके घरको चला कई दिनोंमें वहाँ
 जापड़'चा और बड़ी धूमधामसे लतीफबानोके
 उद्यानमें डेरा डाला और अपने लोगोंसे कहा
 कि लतीफबानोकी टूंडियां कसकर भुटियाते
 हवै तुर्त मेरे पास लाओ उन्हें वैसाही किया
 तब शाहजादेने चाहा कि इस गिंगडी निलज्ज
 को उलटा लटकाके उसकी खालमें भुस भर
 वाया चाहिये और मारकर उसका मांस कुत्ता
 और उपर वालियोंको खिलाइये पर जमील-
 बानोने जो उसकी बहनयो क्षमा चाहो तब
 शाहजादेने उसके कहनेसे क्षमा को फिर क-
 क्षमा पढ़वाकर सुसलमान किया और टेना
 टोटका सब उसे छुड़वाया और जनम् भरकी
 प्रतिज्ञा करवाई और जिन जिन शाहजादों
 और मनुष्यको पशु बनाकर रखाया सबकी छुड़-
 वाया और अपने अपने देशको भिजवाया व

लोग असीस देते ऊँचे अपने अपने घरको गये फिर थोड़े दिन पीछे लतीफ़ बानोको वही छोड़ कर चला ऐक ज़हीनेमें शाहजहाँसके देशमें जो मिहिरअंगेजका बापया आपछ'चा और नगरके बाहर अपना डेरा डाला और जमील बानो और जंगीकी लड़कीको वही रखकर आप मिहिरअंगेजके प्रश्नके उत्तर देनेके लिये उसकी द्वारेपर जाके ठक्का बजाया तब कितने ऐक लोग शाहजादेको उसकी बापके पास लेगये कैमूस शाहने बहुत समझाया कि तुम इसबातमें मत पड़ो क्यों कि किसीने आज तक उसकी प्रश्नका उत्तर यथार्थ नहीं दिया है तुम क्या क्यों अपना जी गंवाया चाहते हो तब शाहजादेने कहा कि जो गुप्त भेद आपकी लड़की अपने मनमें रखकर प्रश्न करती है उसका उत्तर मैं देनेको आया हूँ जब यह बार्ता मिहिरअंगेजको पछ'ची उसने शाहजादेको बुलवाया तब शाहजादेने पूछा कि कही क्या प्रश्न है मिहिरअंगेज बोली कि (गुलने सनौबरके साथ क्या किया) शाहजादेने कहा

कि जो कुछ उसने किया उसका फल भली रीत
 पाया क्या तू भी उसकी तरह खज्जित होगी
 मिहरअंगेजके मनमें शाहजादेके इस उत्तर
 देनेसे धड़का पड़ गया पर मूर्खताई और हटसे
 बोली कि हे शाहजादे जब तू सब वृत्तान्त
 आदसे अन्ततक कहेगा तब मुझे निश्चय होगा
 कि तू सच कहता है जब शाहजादेने देखा कि
 यह निलीज्ज अपनी हट नहीं छोड़ती तब कहा
 कि मिहरअंगेज जो तू सब कहानी गुल और
 सनौबरकी सुना चाहती है तो अपने बापसे
 कह कि बादशाह बजीर और सब लोग 'ऐकट्टे'
 होकर सभाकरें तो मैं गुल और सनौबरकी
 कहानी सब कह सुनाऊं मिहरअंगेजने वैसा ही
 किया जब सभा हुई और बादशाह कैमूस गद्दी
 पर बैठे तब शाहजादेने कहा कि मिहरअंगेज
 अब भी सावधान हो जब मैं तेरे प्रश्नका उत्तर
 दूँगा उस समय तू मेरे अधीन होगी जो चाहूँगा
 सो करूँगा मिहरअंगेजने सबके सामने कहा
 अच्छा और बादशाहने भी हामीभरी तब शाह-

जादने कहा कि सभाके जितने लोगहैं उन
 सभासे मेरी यह निवेदनहै कि इस प्रश्नका
 उत्तर किसीने आजतक नहीं दिया और यह
 बड़ा गुप्त भेदहै पर मैं अब कहताहूँ पहिले
 पूछिये यह व्योरा शाहजादीने कहाँसे सुना
 कि जिसके लिये सैकड़ों जीव हत्या करचुकीं
 और करती चली जातीहैं यह बात जो शाह-
 जादीसे पूछी उसका उत्तर कुछ न देसकी और
 चुप होरही तब शाहजादेने कहा ओ मिहर
 अङ्गेज व्योरा गुल और सनौवरका भली रीतसे
 जान्ताहूँ पर सच भूठ तुम्हें क्योंकर जाना जावे
 इसलिये उचितहै कि आपने जिससे यह समा-
 चार सुनाहै उसको यहाँ बलवाइये तो मेरे
 बातकी सच्चाई भुठार्ई सब प्रकाश होगी तिस
 परभी मिहरअङ्गेज मूर्खताईसे शाहजादेसे उत्तर
 माँगतीथी और शाहजादाभी साक्षी चाहताथा
 निदान बेकल और खिसयानी होकर बोली कि
 मैंने किसी विदेशीसे यह कहानी सुनीथी अब
 उसको कहाँ पाऊँ जो यहाँ बुलवाऊँ तब शाह-

जादेने त्योरी चढ़ाकर कहा कि जो मैं अभी
 उस विदेशीको लाऊँ तो क्या होवे मिहरअंगेज
 बोली कि इससे भला क्या है उस समय शाह-
 जादा कैमूसशाहकी हाथ पकड़कर मिहरअंगेज
 के सिंहासनके पास ले गया और लोगोंसे कहा
 कि इस सिंहासनको यहांसे उठा ले जाओ
 ज्योंही उसको उठाया वीही मिहरअंगेजके
 गुप्तभेदका (शोशा) लज्जाके पत्थर पर गिरके
 चकनाचूर होगया अर्थात् वुह जंगी जिसको
 छिपा रखाथा उस सिंहासनके नीचेसे निकला
 शाहजादेने भट उसको पकड़ लिया बादशाह
 और सब लोग जितने सभामें बैठे थे माथा
 नीचेकर उंगली दान्तोंमें दबाने लगे फिरभी
 मिहरअंगेज कहतीथी कि शाहजादे बतला कि
 गुलने सनौबरसे क्या किया तब शाहजादेने कहा
 कि धिक्कार तुम्हारे इस इस प्रश्न करने पर तुम
 बड़ी निर्लज्ज हो और अबतकभी तुम्हें लज्जा
 नहीं आती कि बारम्बार पूछ रही है निदान
 उस जंगीको सभामें लाकर बिठलाया तब शाह-

जा देने कहानी गुल और सनौबरकी आदसे
 अन्ततक और व्योरा अपने पङ्चनेका उस
 देशमें कहना आरम्भ किया और बात बातमें
 जंगीकी साक्षी मान्ता रहा जब शाहजादा
 कहानी गुल और सनौबरकी सब कह चुका
 तब जंगी बोला कि ओ शाहजादे जो कुछ तूने
 कहा सब ठीक और सच है उस समय बादशाह
 कैमूस और सभाके सब लोग शाहजादेकी
 साहस और चतुराई पर बाहवाह करने लगे
 शाहजादाभी बादशाहको अपने उपर दयाल
 पाकर बहत प्रसन्न हुआ निदान बादशाहने
 बहतसा धन सम्पत्ति देकर अपनी लड़की मिहर
 अङ्गेजकी शाहजादेकी हाथ सौंपी ॥

तेरहवीं कहानी मिहरअंगेजकी साथ
 लेकर जाना शाहजादेका अपने देशको
 और सब व्योरा कहना अपने बापसे
 और जंगीके प्रतिकार देने और
 मिहर अंगेजसे विवाह करने और
 कहानीकी समाप्ति ॥

शाहजादा थोड़े दिनों वहाँ रहकर बादशाह से
 बिदा हो अपने देश को चला हवशिन और
 जमीलःबानो और मिहरअंगेज सहित अपने नगर
 में आपहुँचा ज्यों यह बात शमशादलाल पेश
 उसके बाप को पहुँची उसकी शीकरी सन्धा
 अहलाद के प्रातःकाल से पलट गई और जिन्होंने
 उसके बियोग से रो रोकर अपनी आँखों को अंध
 किया था और केवल साँस का खट्का रह गया था
 इस समाचार के सुनते ही बहुत प्रसन्न हुई और
 आँखों में उन्ही के उजाला आया सारे नगर में
 आनन्द का ढूँढ़ेरा फिर गया और घर घर अह-
 लाद होने लगा बादशाह ने बहुत सा निष्ठावर
 और दान पुन्य किया कि कंगाल निहाल होगये
 और दुखी धनी बन गये बादशाह बुढ़ापे से
 और शाहजादे के बियोग में बहुत दुर्बल होगये
 फिर भी डगमगाते हुई दौड़कर शाहजादे को
 छाती से लगाकर मूँह हाथ चूमते रहे और गर्ले
 मिलकर डाढ़ मार कर बहुत सा रोये शाहजादा
 भी पैर चूमकर हाथ बाँधे सामने खड़ा रहा

और बादशाहको रोने न दिया निदान शाह-
जादेने सब ब्यारा बाकाफ़ देशमें जानेका गर-
पंखकी सहायतासे और ब्याह करना जंगीकी
लड़की और जमीलःवानीसे और लज्जित करना
मिहर अंगेजके बापको औ छुट् कारा पाना
लतीफःवानीके टोनेसे निवेदन किया बादशाह
उसकी साहस और बुद्धिपर वाहवाह करने
लगे और बल्लत प्रसन्न हुवे शाहजादेने मिहर
अंगेजका हाथ पांव बांधकर बादशाहके सम्मुख
लाया और कहा कि इस कठोर अत्याचारी
हत्यारनीने आपकी लड़कोंको मारा है और मैं
इसको बल्लत यतनसे आपकी पास लाया हूँ अब
जो आपकी इच्छा हो सो कीजिये बादशाह
मनमें विचाराकि शाहजादा इसको बल्लतसी
लेश उठाकर लाया है और इसकी प्रीतकी जालमें
फसा है अब जो मैं इसको जरवा डालूँ तो मुझे
कुछ लाभ नहीं बरं शाहजादेका मन उदास
होजायगा यह बात सोचकर शाहजादेसे कहा
कि हे पुत्र यह वस्तु अब तुम्हारा है अब जो

तुम्हारी इच्छा हो सो करो उस समय शाह-
 जादेने चार घोड़े घोड़सालसे मज्जवाये और
 उनके पांवके नीचे जंगीको चौमेखा बंधवाकर
 कोड़े लगवाने आरम्भ किये यहाँतक कि मारे
 कोड़ोंके पीठ उसकी टुकड़ेर और घोड़ोंकी
 टाँगोंसे हाथ पैर चकनाचूर होगये मिहिरअद्वेज
 यह देखकर बहुत डरी और रोने लगी कि
 कहीं मुझेभी इसी रीत मार न डाले चट् बात
 बनाकर बाली कि अरे शाहजादे जो कोई बड़ा
 क्लेशपाकर ऐक उत्तम पदार्थको पावे चाहिये
 कि उसकी भली प्रकारसे रखे और उसका अप-
 मान नकरे और यह दोष जो मुझसे हुवेहैं यह
 सब ईश्वरकी इच्छासे जाना चाहिये और जो
 भाई आपकी अथवा और कोई मेरे हाथों मारे
 पड़े उन्हेंके कपालमें लिखने वालेने यीहो
 लिखाथा और मेरा भाग तेरे साथ बढ़ाया जो
 ऐसा हेत नहीता तो तू वाकाफ बयोकर प्रस-
 चता और किसीका क्या साध्य जो उस व्योरेकी
 जानकर जंगीको मेरे सिंहासनके नीचेसे निका

लता और मेरा हाथ पकड़लेता आजतक मेरे
 नये वृक्षके फल फूलपर किसीके आशा और
 बञ्छाका हाथ नहीं पड़'चा और इन होटीके
 पिस्तेका स्वाद किसीने नहीं चखा इस बातको
 जिस ठबसे जीचाहे जांचले शाहजादा इस बना
 बट और लगावटकी बातोंको ताड़गया और
 जाना कि इसको बहुत भय हुआ पर उसकी
 चतुराई और बोल चालसे बहुत प्रसन्न हुआ
 निदान एक दिन अच्छीसी मस्करत देखकर उस
 चन्द्र बदनसे व्याह करलिया और उसके साथ
 सुख चैन करने लगा समाप्त यहथी कहानी
 गुल और सनौबरकी सुन्नेवालों पर गुप्त नरहे
 कि अभिप्राय इस कहानीके व्याख्यानसे यह है कि
 संसारमें सुख दुख दोनों मिले हैं जब लग मसुख
 दुख नहीं उठाता धन सम्पत्त नहीं पाता धना-
 गारमें सर्प है और फूलमें कांटा और संसारके
 कांटा और संसारके व्यापार सब देखने और
 सुन्नेके हैं यद्यपि कहानीकी सुन्ना जीको बहला-
 ना है परन्तु बहुतसी जगह ऐसी है कि उसके

सुखसे मनुष्यकी बुद्धि बढ़ती है अले बुरे और
योगअयोगका ज्ञान होता है और संसारके चरि-
त्रोंकी जानकारी अपने तर्क अले बुरेसे बचा
रखते हैं इति ॥

JUL 19

शुभम् ॥ शुभम् ॥

